हँसती दुनिया

₹15/-

वर्ष 46 • अंक 10 • अक्टूबर 2019

हँसती दुनिया

• वर्ष 46 • अंक 10 • अक्टूबर 2019 • पृष्ठ 52
बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका
(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : सी. एल. गुलाटी
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9
हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II,
नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरकारी कालोनी,
दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक **विमलेश आहूजा**
सहायक सम्पादक **सुभाष चन्द्र**

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org

सदस्यता शुल्क

देश	1 वर्ष	3 वर्ष	5 वर्ष	11 वर्ष
भारत/नेपाल	₹ 150	₹ 400	₹ 700	₹ 1500
यू.के.	£15	£40	£70	£150
यूरोप	€20	€55	€95	€200
अमेरिका	$25	$70	$120	$250
कनाडा/आस्ट्रेलिया	$30	$85	$140	$300

अन्य देश : उपरोक्तानुसार अमेरिकी डालर के बराबर राशि देय होगी।

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
6. अनमोल वचन
16. बूझो तो जानें
17. समाचार
38. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

कहानियां

8. सच्चे भारत का...
: राधा नाचीज़
9. एक तीर से दो शिकार
: प्रिन्स खुराना
21. सीखने की उम्र
: दिनेश दर्पण
22. जैसा को तैसा
: नेहा गाबा
23. पछतावा
: विपिन कुमार
31. नया सवेरा
: प्रमीला गुप्ता
40. जीवन की उपयोगिता
: अर्चना सौगानी
40. मातृभूमि ...
: विभा वर्मा

विशेष/लेख

8. गाँधी जी की विस्मरणीय बातें
: फेनम सोगानी
8. सच्चे भारत की स्पर्श अनुभव
: राधा नाचीज़
18. टूकन
: डॉ. परशुराम शुक्ल
20. मकड़ियां गजब की
: किरण बाला
22. बातें नवीन तथ्य सम्बन्धी
: विभा वर्मा
26. वृक्षों का विचित्र संसार
: चन्द्रभान निरंकारी
28. बड़े दांतों वाला बबीरुसा
: जयेन्द्र
30. विज्ञान प्रश्नोत्तरी
: डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल
41. कीवी
: जयेन्द्र
42. ध्रुवीय लोमड़ी
: डॉ. परशुराम शुक्ल

कविताएं

7. बापू जन्मे भारत में,
लाल बहादुर शास्त्री महान
: हरजीत निषाद
11. मिल-जुलकर सब
दीप जलायें
: राजेन्द्र निशेश
11. जलते दीपक
: राजकुमार जैन 'राजन'
19. अपनी मंजिल पाते
: डॉ. परशुराम शुक्ल
25. महात्मा बापू, सच्चे वीर
: डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी
29. मेला
: कीर्ति श्रीवास्तव
33. मुझको यह बतलाओ माँ!
: डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल
39. दो बाल कविताएं
: मीरा सिंह 'मीरा'
43. दो बाल कविताएं
: कमल सिंह चौहान
47. दो बाल कविताएं
: रंजना चौधरी
47. गुब्बारे
: गफूर स्नेही

गुरुजनों का सम्मान करें

सभी बच्चे बड़े होना चाहते हैं, अपने पैरों पर चलना चाहते हैं, दौड़ना चाहते हैं। इसलिए वे अपने बड़ों की उंगुली पकड़कर चलना सीखते हैं, दौड़ना सीखते हैं और अपने हाथ से खाना सीखते हैं। यह प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है, जब तक कि वे इस योग्य न हो जाएं कि अपने आप चल-फिर सकें, घूम सकें, भाग सकें और अपने सभी कार्य कर सकें। जब वे इस योग्य हो जाते हैं तो धीरे-धीरे इस क्रिया को अपनी अर्जित योग्यता मानते हैं।

इसी प्रकार वे अपने स्कूल या फिर विश्वविद्यालय जाते हैं, शिक्षा प्राप्त करते हैं और उत्तीर्ण होने पर खुशी भी मनाते हैं। अपनी योग्यता की डिग्री भी उन्हें मिल जाती है। इस योग्यता की डिग्री के साथ वे अनेकों जगह आवेदन करते हैं कि उन्हें कोई अच्छी नौकरी या अच्छा पद मिल जाए। यह पद भी अनेकों को मिल भी जाता है और कुछ इससे वंचित भी रह जाते हैं।

इस जीवन में सभी को हर वस्तु अपनी इच्छा अनुसार जैसा वे चाहते हैं उसी तरह नहीं मिल पाती। कुछ न कुछ रह ही जाता है। जिन्हें सभी कुछ या लगभग बहुत कुछ मिल जाता है, वे अपने को उस योग्य मानने लगते हैं कि वे उस योग्य थे इसीलिए उन्हें हर सुविधा प्राप्त हो गई और जिन्हें ये सब कुछ नहीं मिल पाता उन्हें अधिकांशतः लोग उनकी अयोग्यता को कारण मानते हैं।

जिसको मिल जाता है वह अपनी योग्यता का बखान करता रहता है और अधिकतर उन लोगों को हेय या निम्न समझता है जिनको इस तरह कुछ मिल नहीं सका।

अब सोचने का विषय यह है कि क्या पद, प्रतिष्ठा और अच्छा रहन-सहन ही योग्यता का मापदण्ड है। ऐसी योग्यता जो किसी भी अन्य व्यक्ति के हृदय को ठेस या चोट पहुँचाए, क्या उसको सही मायने में योग्य कहा जा सकता है। इस तरह की योग्यता केवल उसी के अंहकार को तृप्त कर सकती है और किसी को नहीं। हाँ वह योग्य व्यक्ति भी वास्तविकता में योग्य हो सकता है जब उसे अपनी इस बात का एहसास हो जाए। इसीलिए ऐसा अक्सर कहा भी जाता है कि- *योग्यता का पहला लक्षण है अयोग्यता का बोध और अयोग्यता का पहला लक्षण है योग्यता का दंभ।*

सफलता-असफलता, यश-अपयश, पद-प्रतिष्ठा यह सब मिलती रहती है। यह भी सच है कि ये स्थिर कभी भी नहीं है। इसीलिए हमें किसी भी व्यक्ति को उसके कार्य से, उसकी आर्थिक दशा से, उसकी असफलता से नहीं आंकना चाहिए। इन बातों का ध्यान रखना हम सभी का उत्तरदायित्व है।

प्यारे साथियों! जिस किसी ने भी हमें योग्य बनाया है या योग्य बनाने में सहायक बने हैं। वे चाहे माता-पिता, गुरुजन, पड़ोसी, मित्रजन या कोई अन्य हो, हमें उनका उपकार मानना चाहिए और उनका कृतज्ञ रहना चाहिए। हमें उनका भी अवश्य आदर एवं सम्मान करना चाहिए जिन्होंने हमें हमारी अयोग्यता का बोध कराया है।

जीवन में सभी का सम्मान, आदर अवश्य करना चाहिए। यह एक मानवीय गुण है जिसे अपनाकर ही हम मानव कहलाने के योग्य हो सकते हैं।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ : हरजीत निषाद

सम्पूर्ण अवतार बाणी !!!

पद संख्या : 208

खेती चाहे किसे दी होवे सूरज कदे चितारे ना।
चन्न सभनां नूं दए चानणी रूप करूप विचारे ना।
पाणी सभ दी प्यास बुझावे ऊंच नीच एह वेखे ना।
हवा कदे वी माड़ा चंगा छोटा वड्डा देखे ना।
पूरा सत्गुर वी जग अन्दर सभ नूं गले लगान्दा ए।
कहे अवतार जेहो जेहा होवे सभ नूं चरनीं लान्दा ए।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी कह रहे हैं कि सद्गुरु अत्यन्त कृपालु होता है। यह सब पर अपनी कृपा और करुणा ही बरसाता है।

जिस प्रकार खेती चाहे कैसी भी हो, उसमें कोई भी फसल तैयार हो रही हो, सूरज उन सभी खेतों को एक समान गर्मी देता है। सूरज खेतों की सभी फसलों को बढ़ने और पकने के लिए एक जैसी ऊष्मा और ताकत प्रदान करता है। सूर्य की नजर में अलग-अलग खेतों के प्रति अलग-अलग व्यवहार कभी भी देखने को नहीं मिलता। इसी प्रकार चन्द्रमा भी अपनी चांदनी सभी को समान रूप से देता है। चन्द्रमा रूप-कुरूप का विचार नहीं करता कि वह रूपवान को ज्यादा और जो सुन्दर नहीं है उसको कम चांदनी दे। इसी तरह सद्गुरु की नजर में भी सुन्दर-असुन्दर का कोई भेदभाव नहीं होता। सद्गुरु की कृपा सभी के लिए समान रूप से उपलब्ध होती है।

बाबा अवतार सिंह जी समझा रहे हैं कि जिस प्रकार पानी का काम सभी की प्यास बुझाना है। उन्हें जीवन प्रदान करना है। बिना किसी के गुण-दोष का विचार किए उन्हें तृप्त करना है। ठीक इसी प्रकार सद्गुरु का भी यही स्वभाव है कि सबको परमात्मा के दर्शन कराकर सबका जीवन सफल किया जाए। संसार का कोई भी इन्सान परमात्मा के दर्शनों के लिए प्यासा न रह जाए। सद्गुरु का यही यत्न होता है कि प्रभु दर्शनों की हर किसी की प्यास अवश्य बुझनी चाहिए। संसार में हवा का काम सबको स्वांस के लिए ऑक्सीजन उपलब्ध कराना है। हवा अगर अच्छा-बुरा अथवा छोटे-बड़े का विचार करने लग जाए तो इन्सान का पलभर भी जीना मुश्किल हो जाएगा। पानी या भोजन के बिना तो कुछ समय बिताया भी जा सकता है लेकिन हवा के बिना तो कुछ पल भी जीना मुश्किल होता है। यह परमात्मा की ही विशेष कृपा है कि हवा बिना किसी भेदभाव के सबको जीवन दे रही है।

बाबा अवतार सिंह जी संसार के समस्त इन्सानों को समझाते हुए कह रहे हैं कि सूरज, चांद हो या पानी अथवा हवा हो ये सभी निरन्तर परोपकार कर रहे हैं, मानव मात्र का कल्याण कर रहे हैं।

इसी तरह परोपकारी सद्गुरु भी सारी दुनिया का कल्याण करने के लिए संसार में आता है। बिना भेदभाव के सबको गले लगाता है। संसार का प्यार तो फिर भी स्वार्थ वाला प्यार है लेकिन सद्गुरु का प्यार निस्वार्थ है। जो भी इन्सान सद्गुरु के चरणों के प्रति निष्काम भाव से समर्पित हुआ सद्गुरु उसका जीवन ईश्वरीय सौगात अर्थात् ब्रह्मज्ञान देकर सफल कर देता है।

संग्रहकर्ता : भावना निरंकारी (मानसरोवर, जयपुर)

अनमोल वचन

★ सफलता का एक ही मंत्र– पक्का इरादा, दूरदृष्टि, कड़ी मेहनत और अनुशासन।

★ ज्ञान उजाला है और अज्ञान अंधकार।

★ मानव प्रभु की उत्तम रचना है। इसका रूतबा बनाये रखना।

★ चरित्र की सम्पत्ति सारी दुनिया की दौलत से बढ़कर है।

★ आज पढ़ना सब जानते हैं, मगर पढ़ना क्या चाहिए, यह कोई नहीं जानता।

★ चन्द्रमा अपना प्रकाश सारे आकाश में फैलाता है परन्तु अपना कलंक अपने भीतर ही रखता है।

★ विद्या का अभ्यास नहीं करने से यह विष की तरह विनाशक बन जाती है।

★ आलस्य करने से प्राप्त किया गया ज्ञान भी शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

★ जीवन सदा ही फैलाव है, संकीर्णता मृत्यु है।

★ जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है।

★ पुष्प की सुगन्ध हवा के विपरीत नहीं जाती परन्तु सद्गुणों की महक सब तरफ यानी चहुंओर फैल जाती है।

★ ऐसी पुस्तक का अध्ययन प्रतिदिन अवश्य करें जो आपकी आत्मिक, शारीरिक और सामाजिक उन्नति में सहायक हों।

★ सोने की डली को अगर कीचड़ में फेंक दें तो उसका मूल्य कम नहीं होता। अगर मिट्टी आसमान में उड़ जाये तो उसका मूल्य बढ़ नहीं जाता, उलटे आँखों में पड़ती है।

★ किसी के गुणों की प्रशंसा में अपना वक्त बर्बाद न करो बल्कि उसके गुणों को अपनाने का प्रयास करो।

★ अपने आप से सत्य बोलना ही सच्चा सत्संग है।

★ गुणों को अपनाना ही उसकी अच्छी सराहना है।

★ लगन के बिना किसी में भी महान प्रतिभा पैदा नहीं हो सकती।

★ लोभ से बुद्धि नष्ट होती है, बुद्धि नष्ट होने से लज्जा, लज्जा नष्ट होने से धर्म तथा धर्म नष्ट होने से मनुष्य का सर्वत्र नष्ट हो जाता है।

★ क्रियाशीलता ही ज्ञान प्राप्ति का एक मात्र मार्ग है।

★ अहंकारी मनुष्य में न ज्ञान टिक सकता है और न वह दूसरों से सम्मान पाता है।

★ एक मात्र वस्तु, जो हमें पशु से भिन्न करती है। वह है, सही और गलत के मध्य भेद करने की क्षमता, जो हमें सभी में समान रूप से विद्यमान है।

★ जो व्यक्ति अहिंसा में विश्वास करता है और ईश्वर की सत्ता में आस्था रखता है, वह कभी भी पराजय स्वीकार नहीं करता।

★ यदि आपको अपने उद्देश्य, साधना और ईश्वर की आस्था में विश्वास है तो सूर्य की तपिश भी शीतलता प्रदान करेगी।

दो बाल कविताएं : हरजीत निषाद

बापू जन्मे भारत में

साबरमती के प्यारे महान संत थे बापू।
सहनशीलता की मिसाल गुणवंत थे बापू।
सत्य अहिंसा का झंडा दुनिया में लहराया,
हिंसक को क्षमा किया क्षमावन्त थे बापू।

दो अक्टूबर जन्म दिवस में जन्मे पोरबन्दर में।
सन अठारह सौ उनहत्तर सुख बरसा आंगन में।
विश्व अहिंसा दिवस इस दिन मनाता जगत सारा,
राष्ट्रपिता की प्यारी मूर्ति बसी हर मन में।

पिता करमचन्द अति सुशील माता पुतलीबाई।
बापू अफ्रीका गए करने बैरिस्टर की पढ़ाई।
भेद भाव से दूर सद्भावों के पुजारी,
हिंसा नफरत से सदा रही उनकी लड़ाई।

लाल बहादुर शास्त्री महान

कद छोटा था ऊँची शान।
लाल बहादुर बड़े महान।
सत्य सादगी वाला जीवन,
शास्त्री जी की थी पहचान।

पिता शारदा का परिवार।
राम दुलारी माँ का प्यार।
मुगलसराय जन्म स्थान,
दो अक्टूबर उन्नीस सौ चार।

गूंजे गाँव शहर गलियारे।
जय जवान जय किसान के नारे।
अन्न बढ़ाया शत्रु मिटाया,
प्रधानमंत्री थे सब के प्यारे।

ग्यारह जनवरी उन्नीस सौ छियासठ।
मौत ने आने की दी आहट।
विजय घाट पर सोया लाल,
राज दिलों पर बसा है घट-घट।

संस्मरण : फेनम सोगानी

गाँधी जी की विस्मरणीय बातें

★ एक दिन कुछ बच्चों ने गाँधी जी से पूछा– बापू! आप हमेशा गंजे ही क्यों रहते हो?

इसलिए कि इस देश के बाल अंग्रेज नाई बनकर काटते ही जा रहे हैं। जब मैं अंग्रेजों के बाल पूरी तरह काट दूंगा, तब मैं सिर पर बाल रखूंगा।

बापू का गम्भीर व्यंग्य सुनकर बच्चे मुस्कुराये लेकिन साथ ही उन्हें आभास हुआ कि ये अंग्रेज ही नाई है। हमें एकता से बढ़कर इन नाईयों के बाल काटने होंगे।

★ एक बार एक युवक कलाकार गाँधी जी को अपने बनाये हुए चित्र दिखा रहा था। बीच-बीच में वह किसी चित्र का मर्म उन्हें समझाने की कोशिश करता, मगर गाँधी जी ने उसे बड़े प्रेम से कहा– एक कलाकार का चित्र तो खुद ब खुद ही बोलता है। उसके बारे में कलाकार को कुछ बोलने या समझाने की कोई जरूरत नहीं।

★ एक बार किसी ने गाँधी जी से पूछा– आपने आजादी की जंग किससे जीती?

गाँधी जी बोले– किसी तोप के गोले से नहीं, बल्कि अपने विनोदी तीर अंग्रेज अफसरों के सीने में चलाकर।

प्रश्नकर्ता ने सवाल किया– बापू जी! मैं कुछ समझा नहीं।

बापू ने तुरन्त कहा– बेवकूफ, नालायक, क्या तू अभी तक नहीं समझा।

सुनकर प्रश्नकर्ता ने अपने सीने पर हाथ रखते हुए कहा– हाँ, अब चले हैं मेरे सीने पर व्यंग्य के तीर। मैं सब कुछ समझ गया हूँ।

यह सुन आस-पास खड़े लोग हा-हा... कर हँसने लगे।

★ विलायत में एक दिन बापू किंग्सले हॉल में नाच देखने गये।

–मि. गाँधी, क्या आप हमारे नाच में भाग नहीं लेंगे?– नाचने वाले उम्मीदवारों की भीड़ में से किसी ने पूछा।

–क्यों नहीं, बापू अपनी लाठी की ओर संकेत करते हुए बोले– मैं अपना साझीदार भी चुन चुका हूँ।

सुनकर सारा हॉल उनके साझीदार को देखकर खिलखिला उठा। ●

प्रेरक-प्रसंग : राधा नाचीज़

सच्चे भारत का स्पर्श अनुभव

एक बार महात्मा गाँधी शिमला सम्मेलन में भाग लेने जा रहे थे। वह रेल के तीसरे दर्जे में बैठे। अमेरिकी पत्रकार फ्रौस्टन ग्रोवर भी रेल में थे। उन्होंने गाँधी जी के पास एक पर्चा भेजा। क्या यह बुद्धिमानी नहीं होगी कि आप पहले दर्जे में यात्रा करें? वहाँ आप थोड़ी देर आराम भी कर सकेंगे। आप चौबीस घंटे में जरा-सा भी नहीं सोए हैं। आप थके-मांदे शिमला पहुँचेंगे इससे कोई लाभ नहीं होगा।

गाँधी जी ने उत्तर लिखा– आपके ममता भरे पत्र के लिये अनेक धन्यवाद। लेकिन मुझे स्वाभाविक गर्मी में पिघल जाने दीजिये। भाग्य की तरह यह भी निश्चित है कि इस गर्मी के बाद ताजगी लाने वाली ठंडक मिलेगी और मैं उसका आनन्द लूंगा। मुझे सच्चे भारत का थोड़ा स्पर्श अनुभव करने दीजिये। ★

कहानी : प्रिन्स खुराना

एक तीर से दो शिकार

तेनालीराम विजयनगर के महाराज कृष्णदेव राय के दरबार के विद्वानों में से एक थे। एक दिन उन्हें महाराज के दरबार में देर शाम तक रूकना पड़ा था। रात के समय घर जाते हुए झाड़ी के पास से गुजरते हुए उन्हें कुछ लोगों के फुसफुसाने की आवाज सुनाई दी। वह किसी पेड़ की आड़ में छिप गये और अन्धेरे में उनकी बातें सुनने लगे। वे लोग आपस में बातचीत कर रहे थे कि तेनालीराम बहुत ही अमीर व्यक्ति है और हमारे पास कुछ भी नहीं है लेकिन कल तक हम अमीर हो जायेंगे और उसके पास कुछ भी नहीं रहेगा। इस बात पर सब लोग धीरे से हँसने लगे। उनमें से एक ने कहा– 'यार तुमने खूब कही, तुम्हारे क्या कहने वाह!'

तेनालीराम को भनक लग गई कि चोर उसके घर का सामान चुराने वाले हैं। वे तत्काल अपने घर की ओर दौड़ पड़े। वे रास्ते में एक योजना बना रहे थे जिससे कि चोरों को सबक सिखाया जा सके। घर पहुँचकर उन्होंने अपने घर का दरवाजा खटखटाया। उनकी पत्नी ने दरवाजा खोला। तेनालीराम आंगन में झूले पर बैठ गए। उनकी पत्नी ने उनके लिए दूध का गिलास तैयार किया। तत्पश्चात् शिकायत भरे स्वर में उनसे कहा कि हमारे घर के पीछे वाले खेत में जो धान की फसल है, वह सूखती जा रही है। अगर तुम उसमें समय पर पानी नहीं दोगे तो फसल जल्द नष्ट हो जाएगी।

तेनालीराम ने कहा– 'तुम्हारी बातें ठीक हैं, पर कुछ विशेष कार्य है पहले उसे पूरा करना है जल्दी

आओ।' वे अपनी पत्नी के साथ घर के पिछवाड़े में गये। उन्होंने एक बहुत बड़ा बक्सा निकाला और उसे ईंट-पत्थरों से भर दिया। उनकी पत्नी कुछ समझ नहीं पा रही थी।

तेनालीराम ने बाद में अपनी पत्नी से कहा– 'चलो अब इस बक्से को ले जाकर कुएं में गिरा देते हैं।' यह सुनकर उनकी पत्नी ने पूछा– परन्तु क्यों?

तेनालीराम ने पत्नी के कान में फुसफुसाते हुए सारी घटना सुनाई। उनकी पत्नी हैरान रह गई परन्तु तेनालीराम खुश होकर बोले– यह एक उत्तम अवसर है अपने खेतों को पानी देने का। दोनों उस भारी बक्से को घसीटते हुए कुएं के पास लेकर आए और दोनों ने मिलकर उस भारी बक्से को कुएं के अन्दर फेंक दिया। उसके बाद तेनालीराम ने अपनी पत्नी से ऊँची आवाज में कहा– सुनती हो भाग्यवान! अब कोई भी चोर हमारी मूल्यवान चीजों की चोरी नहीं कर पाएगा। इस बक्से में सब कुछ है सोना, चांदी के आभूषण तथा हीरे-जवाहरात आदि।

पेड़ के पीछे छिपे चोरों ने तेनालीराम की सारी बातें सुन ली थी। तेनालीराम और उनकी पत्नी जैसे ही घर के अन्दर गये उसके थोड़ी देर बाद वे चोर वहाँ से निकलकर कुएं की तरफ आए। कुएं में पानी बहुत था और नीचे जाकर बक्सा निकालना आसान नहीं था। लिहाजा उन चोरों ने कुएं के पानी को उलीचना बेहतर समझा। उन्होंने वहाँ पर एक बाल्टी तथा उससे बंधी एक रस्सी देखी। चोरों ने जल्दी से बारी-बारी से बाल्टी द्वारा कुएं का पानी निकालना शुरू किया। वे पानी निकालते और एक नाले में डालते जाते। सारी रात वे हीरे-जवाहरात के लालच में मेहनत करते रहे। सुबह होने तक उन चोरों को वो बड़ा बक्सा दिखा। उनमें से एक चोर ने कहा– मैं नीचे जाकर उस बक्से को रस्सी से बांधता हूँ। फिर धीरे-धीरे सब चोरों ने भारी बक्से को ऊपर खींचा। उन्होंने बिना विलम्ब किए बक्से के ताले को तोड़ा। परन्तु ये क्या? उस बक्से में तो सोने चांदी के आभूषण, सिक्कों की बजाय ईंट-पत्थर ही भरे हुए थे। सारा माजरा समझते ही जैसे ही वे सारे भागने के लिए उठे उन्होंने देखा कि तेनालीराम सिपाहियों को लेकर खेत के किनारे पर खड़े हुए हैं।

यह देखकर उन चोरों के होश उड़ गये। सिपाहियों ने उन चोरो को वहीं धर दबोचा। बाद में तेनालीराम अपनी पत्नी को लेकर खेत की तरफ गये और बोले– कैसी रही मेरी तरकीब, चोरों की वजह से हमारे धान को कुछ तो पानी मिला। वो भी मुफ्त में।

उनकी पत्नी ने उनकी तरफ देखते हुए कहा– आप सचमुच में चतुर हैं। आपने तो **एक तीर से दो शिकार** कर डाले। फिर वे दोनों जोर-जोर से हँसने लगे।

बाल गीत : राजेन्द्र निशेश

मिल-जुलकर सब दीप जलायें

आओ मंगल दीप जलायें,
मिल-जुलकर सब दीप जलायें।

अंधकार के बंधन छूटें,
फैले घर-घर में उजियारा।
ऊँच-नीच का भेद मिटे सब,
बढ़े आपसी भाईचारा।

चहूँ दिशा में खुशबू फैले,
ऐसे न्यारे सुमन खिलायें।
आओ मंगल दीप जलायें,
मिल-जुलकर सब दीप जलायें।

मन में ऐसी लगन जगा लें,
हम को आगे ही बढ़ना है।
कोई बाधा रोक न पाये,
हर कठिनाई से लड़ना है।

विद्या का अमृत सब पीकर,
कुछ अद्भुत सा कर दिखलायें।
आओ मंगल दीप जलायें,
मिल-जुलकर सब दीप जलायें।

बाल कविता : राजकुमार जैन 'राजन'

जलते दीपक

तूफानों में जलते दीपक,
आंधी में भी पलते दीपक।
देखो गंगा की लहरों पर,
पानी में हैं चलते दीपक।

कभी कांपते कभी चमकते,
अँधियारों को छलते दीपक।
संग पतंग के कभी हवा में,
रहते हिलते-डुलते दीपक।

आगत के स्वागत में हरदम,
देहरी पर मुस्काते दीपक।
घर घर में उजियारा करने,
मिट्टी में हैं ढलते दीपक।

दादाजी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

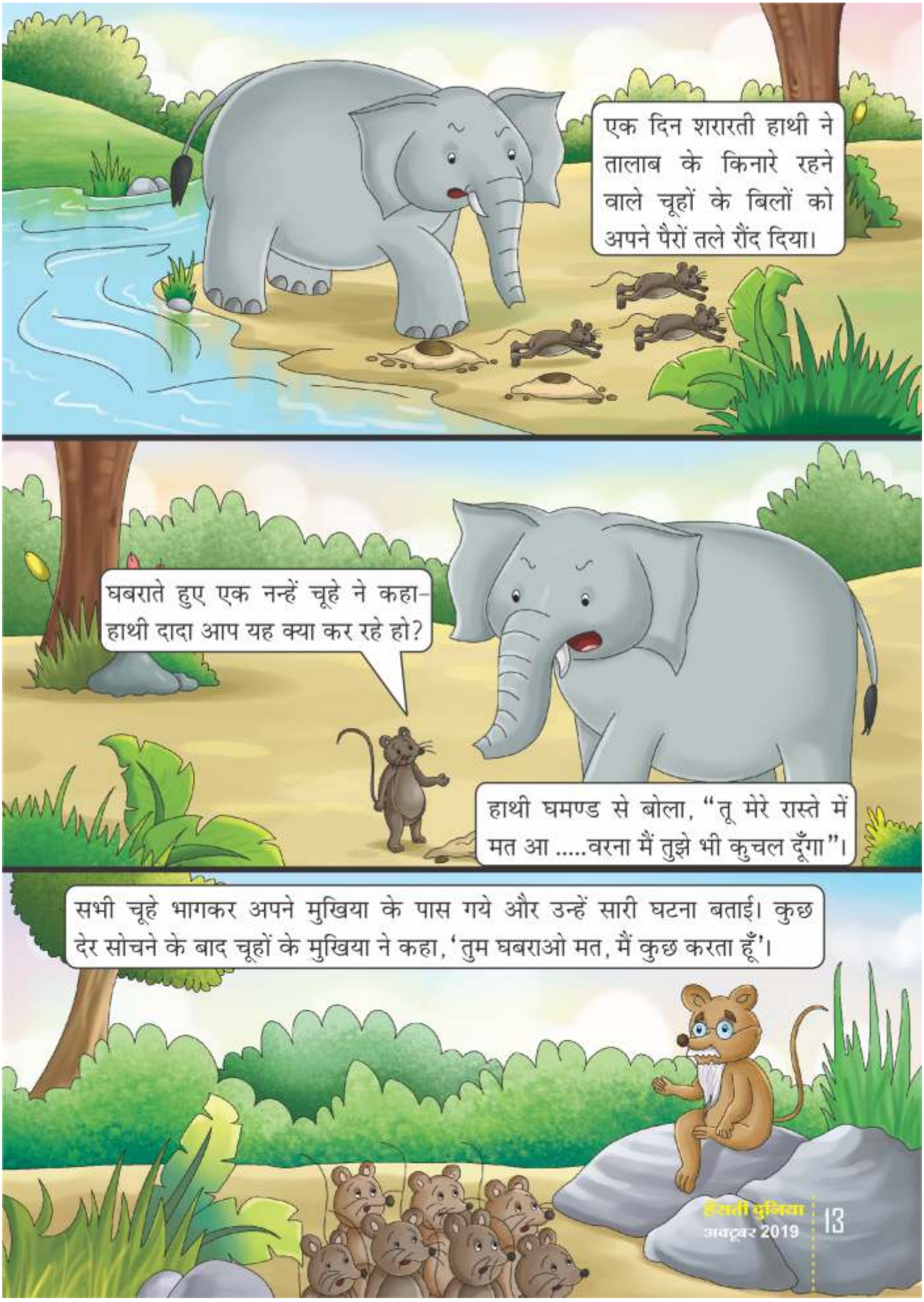
एक दिन शरारती हाथी ने तालाब के किनारे रहने वाले चूहों के बिलों को अपने पैरों तले रौंद दिया।
घबराते हुए एक नन्हें चूहे ने कहा- हाथी दादा आप यह क्या कर रहे हो?
हाथी घमण्ड से बोला, "तू मेरे रास्ते में मत आ .....वरना मैं तुझे भी कुचल दूँगा"।
सभी चूहे भागकर अपने मुखिया के पास गये और उन्हें सारी घटना बताई। कुछ देर सोचने के बाद चूहों के मुखिया ने कहा, 'तुम घबराओ मत, मैं कुछ करता हूँ'।

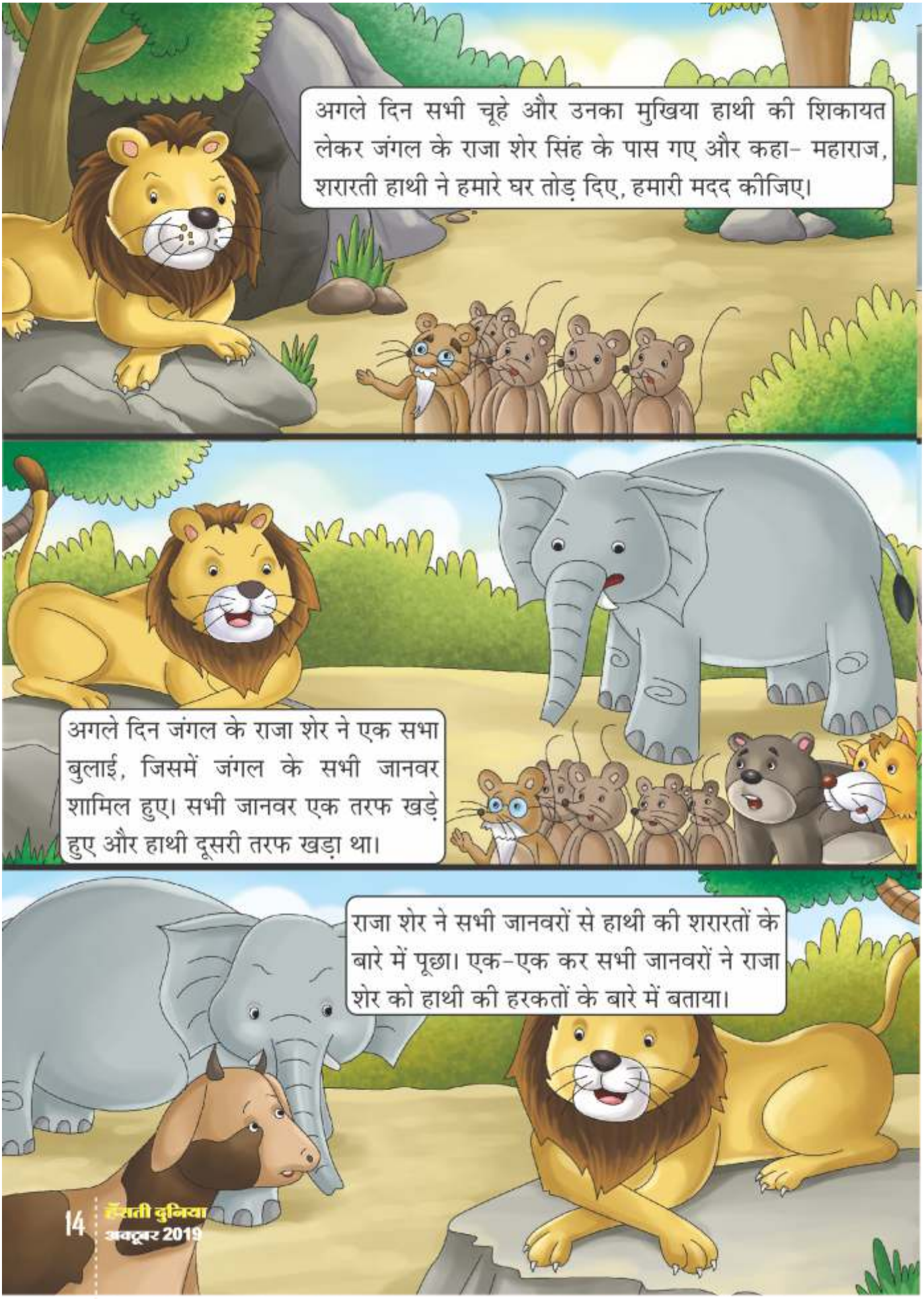
अगले दिन सभी चूहे और उनका मुखिया हाथी की शिकायत लेकर जंगल के राजा शेर सिंह के पास गए और कहा- महाराज, शरारती हाथी ने हमारे घर तोड़ दिए, हमारी मदद कीजिए।
अगले दिन जंगल के राजा शेर ने एक सभा बुलाई, जिसमें जंगल के सभी जानवर शामिल हुए। सभी जानवर एक तरफ खड़े हुए और हाथी दूसरी तरफ खड़ा था।
राजा शेर ने सभी जानवरों से हाथी की शरारतों के बारे में पूछा। एक-एक कर सभी जानवरों ने राजा शेर को हाथी की हरकतों के बारे में बताया।

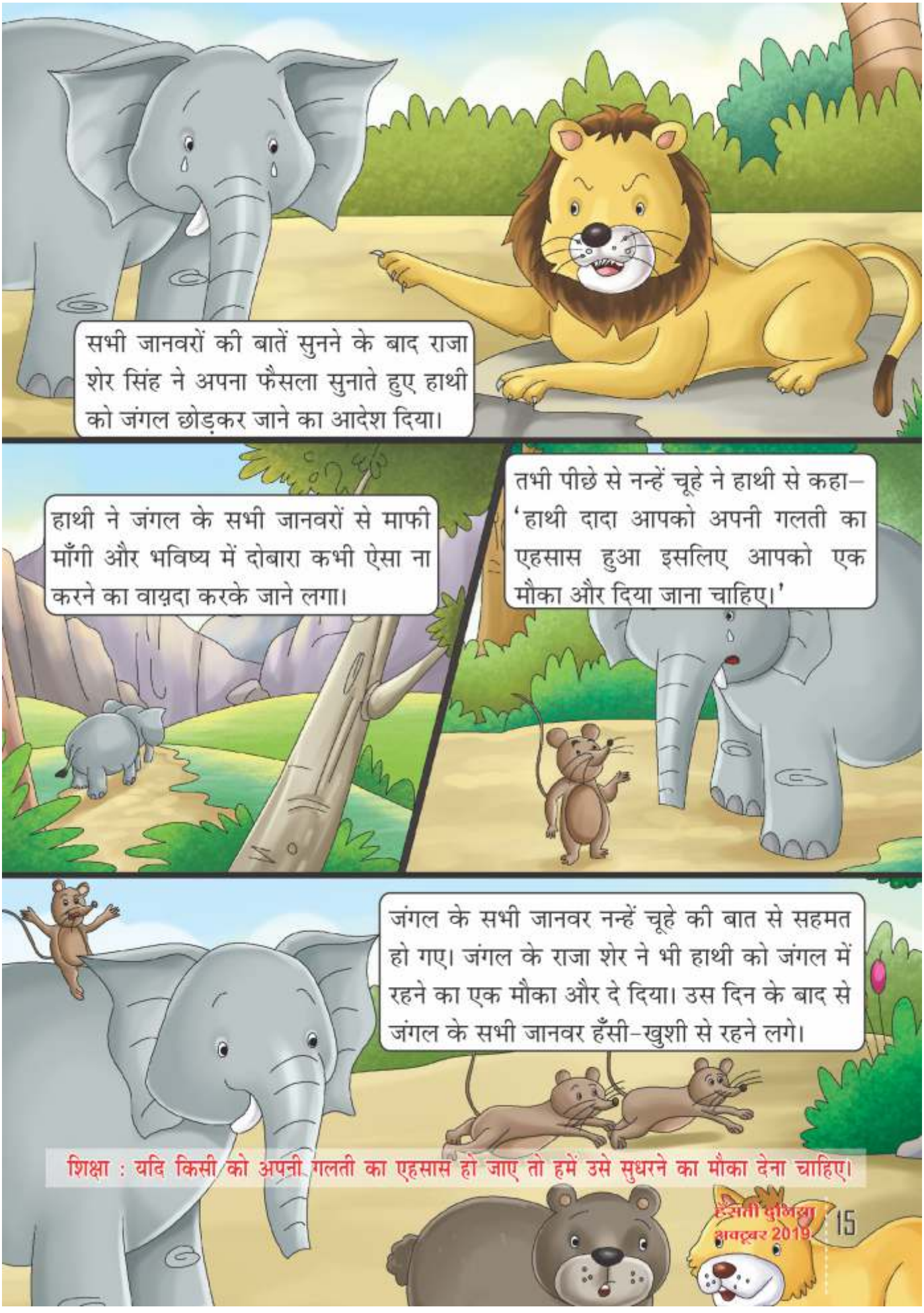
सभी जानवरों की बातें सुनने के बाद राजा शेर सिंह ने अपना फैसला सुनाते हुए हाथी को जंगल छोड़कर जाने का आदेश दिया।
हाथी ने जंगल के सभी जानवरों से माफी माँगी और भविष्य में दोबारा कभी ऐसा ना करने का वायदा करके जाने लगा।
तभी पीछे से नन्हें चूहे ने हाथी से कहा– 'हाथी दादा आपको अपनी गलती का एहसास हुआ इसलिए आपको एक मौका और दिया जाना चाहिए।'
जंगल के सभी जानवर नन्हें चूहे की बात से सहमत हो गए। जंगल के राजा शेर ने भी हाथी को जंगल में रहने का एक मौका और दे दिया। उस दिन के बाद से जंगल के सभी जानवर हँसी-खुशी से रहने लगे।
शिक्षा : यदि किसी को अपनी गलती का एहसास हो जाए तो हमें उसे सुधरने का मौका देना चाहिए।

प्रस्तुति : पंकज कुमार निरंकारी

1 तुम न बुलाओ मैं आ जाऊंगी,
न भाड़ा न किराया दूंगी।
घर के हर कमरे में रहूंगी,
पकड़ न मुझको तुम पावोगे।
मेरे बिन तुम न रह पावोगे।

2 हर जीव हैं मुझको पीते,
मुझको पीना हरदम चाहते।
मुझसे प्यार बहुत करते हो,
पर भाप बनूं तो डरते भी हो।

3 मुझमें भार सदा ही रहता,
जगह घेरना मुझको आता।
हर वस्तु से गहरा रिश्ता,
हर जगह में पाया जाता।

4 ऊपर से नीचे बहता हूँ,
हर बर्तन को अपनाता हूँ।
देखो मुझको गिरा न देना,
वरना कठिन हो जाएगा भरना।

5 लोहा खींचू ऐसी ताकत है,
पर रबड़ मुझे हराता है।
खोई सुई मैं पा लेता हूँ,
मेरा खेल निराला है।

6 हमेशा निरंतर चलता,
नहीं किसी से डरता।
कोई रोक उसे नहीं पाता,
जबकि वह चलता धीरे।

7 गोल–गोल से छोटे फल हम,
जो भी खाये वो माने।
खाने लगो, ढेर से खा जाओ,
स्वाद बस लोमड़ी जाने।

8 एक मतीरा है चमकीला,
दिखता है वह पीला–पीला।
छिन–छिन कर वह घटता जाता,
पन्द्रह रोज में मिट जाता।

9 सदा धूप से तुम्हें बचाऊँ,
वर्षा में भी काम आऊँ।
जब भी मैं अपने हाथ फैलाऊँ,
सबके सिर पर मैं चढ़ जाऊँ।

10 मीठे–मीठे गीत सुनाती,
मेरी बोली सबको भाती।
कोई ढूँढ़ ने मुझको आता,
झट पत्तों में मैं छिप जाती।

11 हरदम काटा कभी न बोया,
पाकर भी है तुमने खोया।
जितना मुझे बचाओगे,
शुद्ध हवा तुम पाओगे।

12 अंधकार को हरती हूँ,
उजियाले से भरती हूँ।
झर–झर आंसू रोती हूँ,
पल–पल छोटी होती हूँ।

(बूझो तो जानें के सही उत्तर किसी अन्य पृष्ठ पर देंखे)

समाचार

बैडमिंटन की 'गोल्डन गर्ल' बनी पी. वी. सिन्धु

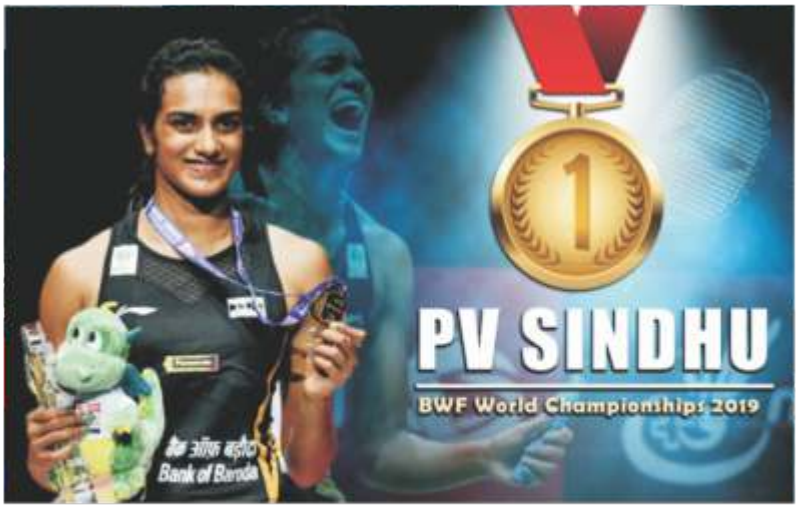

बसेल (स्विट्जरलैंड), 25 अगस्त। भारत की स्टार शटलर पी.वी. सिन्धु वर्ल्ड बैडमिंटन चैंपियनशिप में गोल्ड मेडल जीतने वाली पहली भारतीय बन गई है। सिन्धु ने इस प्रतिष्ठित टूर्नामेंट के फाइनल में जापान की नाओमी ओकुहारा को 38 मिनट के एकतरफा मुकाबले में 21-7, 21-7 से शिकस्त दी। सिन्धु ने इसके साथ ही दो साल पहले इसी टूर्नामेंट के फाइनल में ओकुहारा से मिली हार का बदला भी ले लिया। सिन्धु-ओकुहारा के बीच यह 16वीं भिड़ंत थी। सिन्धु ने उनसे जीत-हार के रिकॉर्ड को सुधारते हुए इसे 9-7 किया। सिन्धु 2013 में पहली बार इस वर्ल्ड चैंपियनशिप में खेलीं, तब से इसमें 21 मैच जीत चुकी हैं।

साल 2017 व 2018 के वर्ल्ड चैंपियनशिप के फाइनल में इस भारतीय शटलर के हाथों से गोल्ड मेडल फिसला। लगातार दो फाइनल हारने के बावजूद सिन्धु हिम्मत नहीं हारीं और लगातार तीसरे साल भी वह इस टूर्नामेंट के फाइनल में जगह बनाने में सफल रहीं। यहाँ उनके और खिताब के बीच एक बार फिर जापान की नाओमी ओकुहारा थीं जिन्होंने साल 2017 में सिन्धु का सोना जीतने का सपना तोड़ा था। लेकिन सिन्धु को इस बार सिल्वर से संतोष नहीं करना था और उन्होंने दबदबे भरा खेल दिखाते हुए 21-7, 21-7 से मुकाबला अपने नाम करते हुए इतिहास रच डाला।

साल का पहला खिताब :

सिन्धु का इस साल का यह पहला खिताब है। उन्होंने इस टूर्नामेंट में उतरने से पहले कुल 28 इंटरनेशनल मैच खेले थे जिसमें से उन्हें 19 में जीत मिली थी। वह केवल इंडोनेशिया ओपन में ही खिताब के करीब पहुंची थीं जहाँ उन्हें सिल्वर से संतोष करना पड़ा था।

चैंपियनशिप का 9वां मेडल :

सिन्धु का इस प्रतिष्ठित चैंपियनशिप का पांचवां जबकि भारत का कुल 9वां मेडल है।

'बूझो तो जानें' के उत्तर

1. हवा, 2. पानी, 3. गैस, 4. द्रव्य, 5. चुंबक, 6. समय, 7. अंगूर, 8. चन्द्रमा, 9. छाता, 10. कोयल, 11. पेड़, 12. मोमबत्ती।

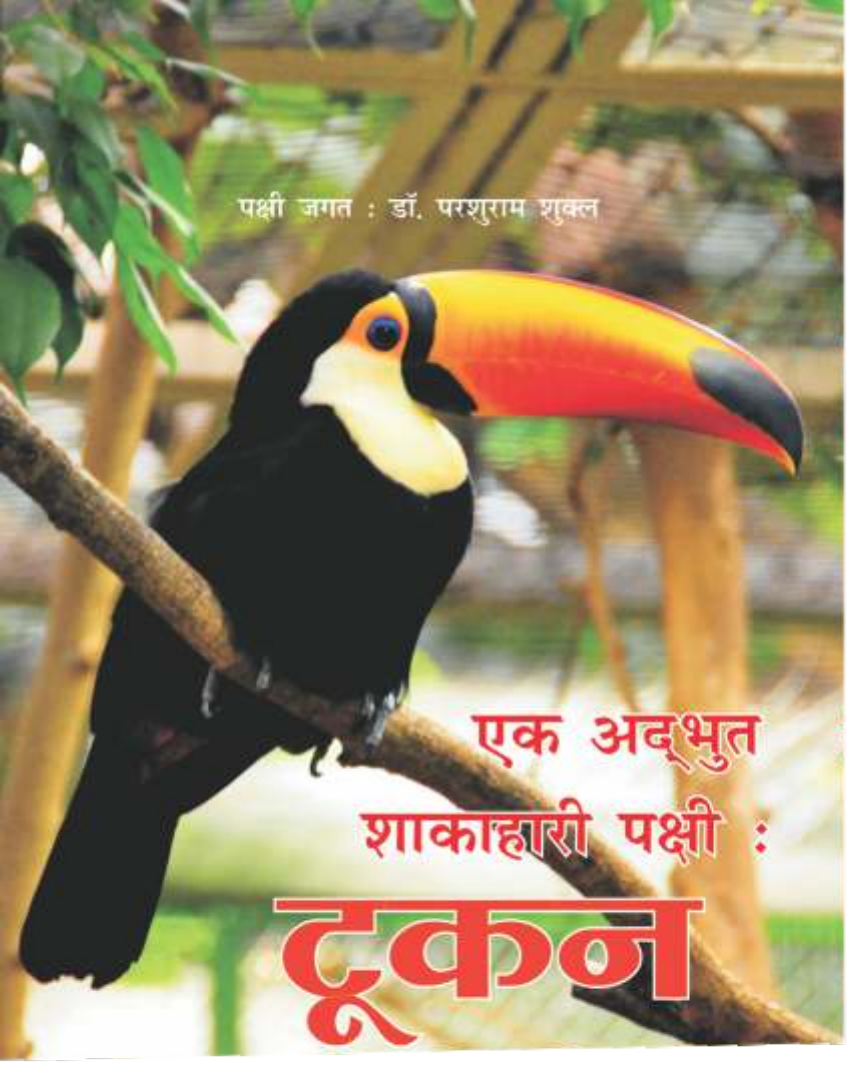

पक्षी जगत : डॉ. परशुराम शुक्ल

एक अद्भुत शाकाहारी पक्षी : टूकन

दक्षिणी अफ्रीका के घने जंगलों में टूकन नामक एक ऐसा विलक्षण पक्षी पाया जाता है, जिसकी चोंच उसके शरीर के आकार से भी बड़ी होती है। यह रेम्फसटाइटा नामक दुर्लभ प्रजाति का पक्षी है। विश्व में इस प्रजाति की दो सौ जातियां थीं जिनमें से केवल सैंतीस जातियां बची हैं, शेष जातियां विलुप्त हो चुकी हैं या विलुप्त होने को हैं।

टूकन का शरीर भारी होता है तथा इसकी चोंच नारंगी रंग की लम्बी और मोटी होती है। इसकी कुछ जातियों की चोंच तो इसके पूरे शरीर से भी अधिक लम्बी होती है। लेकिन इससे इसे कोई कठिनाई नहीं होती बल्कि लाभ ही होता है। इसे अपना पेट भरने के लिए इधर-उधर अधिक भटकना नहीं पड़ता। अपनी लम्बी चोंच के द्वारा यह एक ही डाल पर बैठा-बैठा आसपास की डालियों के फल-फूल आदि आसानी से खा लेता है। इसके साथ ही साथ लम्बी-चौड़ी चोंच होने के कारण इसका पेट भी जल्दी भर जाता है और इसे छोटी चोंच वाले पक्षियों के समान दिनभर दाना नहीं चुगना पड़ता है।

टूकन घने जंगलों में रहता है तथा किसी ऊँचे पेड़ की मोटी डाल पर अपना घोंसला बनाता है। मादा टूकन अंडे देने के साथ ही साथ इन्हें सेने का कार्य भी करती है। कुछ समय बाद अंडों से बच्चे निकल आते हैं। इस समय इनकी चोंच सामान्य आकार की होती है। किन्तु धीरे-धीरे यह लम्बी और मोटी होती जाती है। देखने में टूकन की चोंच भारी लगती है परन्तु वास्तव में यह बड़ी हल्की होती है। अतः इसे उड़ने में कोई कष्ट नहीं होता। टूकन के पंख लाल, पीले तथा नारंगी रंग के अत्यन्त सुन्दर तथा आकर्षक होते हैं। इन्हीं पंखों के लिए इसका शिकार किया जाता है। यदि टूकन का शिकार इसी प्रकार होता रहा तो वह दिन दूर नहीं, जब इस प्रजाति के सभी पक्षी संसार से विलुप्त हो जायेंगे।

कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल

अपनी मंजिल पाते

निर्भय पथ पर बढ़ने वाले,
अपनी मंजिल पाते।

परमपिता ने भेजा तुमको,
कुछ कर दिखलाने को।
मानव रूप दिया है उसने,
सब कुछ कर पाने को।
और कहा जो नर दुख में भी,
रहते हँसते गाते। अपनी ....

आलस कर जो बैठे रहते,
कभी नहीं कुछ पाते।
जो दुनिया से टकराते वो,
कभी नहीं घबराते।
आयें कितनी भी बाधाएं,
आगे बढ़ते जाते। अपनी ....

आगे बढ़ना सरल नहीं है,
यह तो निश्चित जानो।
लेकिन मानव ही मानव की,
ताकत को पहचानो।
मानव कार्य असम्भव जैसे,
भी सम्भव कर जाते। अपनी ...

आगे बढ़ने वाले नर ही,
जग में नाम कमाते।
जीवन का सच्चा सुख पाते,
अजर अमर हो जाते।
राम कृष्ण गौतम ईसा से,
वे ईश्वर कहलाते। अपनी ...

निर्भय पथ पर बढ़ने वाले,
अपनी मंजिल पाते।

प्रस्तुति : किरण बाला

क्या आप जानते हैं?

मकड़ियां गजब की

मकड़ियों की अब तक 30 हजार से अधिक प्रजातियों का अध्ययन हो चुका है तथा अन्य बीस हजार प्रजातियों का अध्ययन होना अभी बाकी है। मकड़ियां सम्पूर्ण विश्व में फैली हुई हैं। इससे जुड़ी अनेक ऐसी बातें हैं जो हमें रोमांचित कर देती हैं।

★ आमतौर पर मकड़ियां जाले बुनकर उसमें शिकार फंसाती हैं लेकिन कुछ प्रजाति की मकड़ियां सीधे शिकार भी करती हैं।

★ 'आन्ट मिमिक स्पाइडर' नामक मकड़ी शत्रु से बचने के लिए चींटी जैसे दिखने का स्वांग रचती है क्योंकि ज्यादातर जानवर चींटियां नहीं खाते।

★ 'वाटर स्पाइडर' नामक मकड़ी बड़ी आसानी से पानी में गोता लगाती है। गोता लगाते समय वह अपने साथ ढेर सी ऑक्सीजन भी ले जाती है जो कि एक बड़े बुलबुले के रूप में होती है।

★ मकड़ी का जाला बड़े काम की चीज है। इसका उपयोग जटिल वैज्ञानिक उपकरणों व यंत्रों में किया जाता है। इस कार्य के लिए विशेष किस्म की मकड़ियां पाली जाती हैं।

★ गोलियत नामक मकड़ी संसार की सबसे बड़ी मकड़ी है जो कि सूरीनाम के तटीय वर्षा जंगल और फ्रांसीसी गुयाना में पाई जाती है। इस प्रजाति की एक नर मकड़ी की टांगों का फैलाव दो फुट तक हो सकता है।

★ आपको जानकर आश्चर्य होगा कि एक मकड़ी ऐसी भी थी जो 28 वर्ष तक जीवित रही। मेक्सिको में पकड़ी गई मादा थेराफोसाइड ने यह आयु प्राप्त की थी।

★ मकड़ी का सबसे बड़ा जाला 28 फुट और नौ इंच से अधिक परीधि वाला था जिसे उष्णकटिबंधीय भूमण्डल के जीनस के बुनकर मकड़ों ने बुना था।

★ ब्राजील की फोनुट्रिया जीनस की घूमने वाली मकड़ी सबसे अधिक विषैली होती है। यह घरों में घुसकर जूतों व कपड़ों में छिप जाती है और बुरी तरह काटती है। इसके काटने से मौत भी हो सकती है।

★ लिफिस्टियस वंश की ट्रेपडोर मकड़ी सबसे दुर्लभ है जो कि दक्षिण पूर्व एशिया में पाई जाती है।

★ अफ्रीका तथा मध्यपूर्व के सूखे रेगिस्तानी इलाकों में पाई जाने वाली मकड़ी की चाल सबसे तेज 16 किलोमीटर प्रतिघंटा होती है। ★

प्रेरक-प्रसंग : दिनेश दर्पण

सीखने की उम्र

बात उस समय की है जब स्वामी रामतीर्थ जापान की यात्रा पर थे। उसी जहाज से एक जापानी सज्जन भी यात्रा कर रहे थे। उनकी उम्र लगभग 90 वर्ष के आस-पास होगी। उनके हाथ-पैर कांप रहे थे व हिल रहे थे। आँखें भी काफी कमजोर हो गई थीं। फिर भी वे चीनी भाषा सीख रहे थे। वैसे उन सज्जन की हालत देखकर चीनी भाषा सीख पाना असंभव सा ही लग रहा था। वैसे भी चीनी भाषा अन्य भाषाओं की अपेक्षा कुछ अधिक कठिन है और फिर सीखने में समय भी काफी लग जाता है। धैर्य की परीक्षा भी हो जाती है। स्वामी रामतीर्थ उस सज्जन की लगन देखकर दंग रह गये। स्वामी जी ने उनसे पूछा– आप इतने वृद्ध होते हुए भी दूसरी भाषा सीख रहे हैं। आप कब तक इसे सीख पायेंगे और फिर कब इसका उपयोग करेंगे?

स्वामी के मुँह से यह सुनकर उस वृद्ध सज्जन ने कहा– श्रीमान जी, जब तक मैं जिन्दा हूँ तब तक तो कुछ न कुछ सीखते ही रहना है। वरना यह जीवन किस काम का? मैं निरर्थक खाली बैठना पसन्द नहीं करता हूँ। यदि मैं थोड़ा बहुत भी सीख लूंगा तो अपना जीवन धन्य समझूंगा। अन्यथा अपना जीवन निरर्थक समझूंगा। एक न एक दिन मरना तो सबको ही है। किसी को आगे किसी को पीछे। यदि मानव मृत्यु के डर से चुपचाप बैठा रहे तो वह अपने जीवन में कुछ नहीं कर पायेगा और अगर निर्भय होकर पूर्ण लगन मेहनत व निष्ठा से कोई भी काम किया जाए तो सफलता अवश्य ही मिलती है। जीवन तो अनन्त समुद्र के प्रवाह के समान है। जिसमें कभी-कभी तूफान आकर उसे विचलित कर देता है।

मगर यदि इस परेशानी रूपी तूफान का डटकर मुकाबला किया जाए तो कोई भी कार्य असंभव नहीं है और फिर सचमुच एक दिन उस सज्जन ने अपनी लगन, मेहनत और निष्ठा के साथ उन्होंने अथक परिश्रम करके चीनी भाषा सीख ली। उस सज्जन ने अपनी मृत्यु से पूर्व पत्र लिखकर स्वामी रामतीर्थ को चीनी भाषा सीख लेने की सूचना दी थी। पत्र पढ़कर स्वामी जी हर्ष-विभोर हो गये।

प्यारे दोस्तों! यह सच है कि यदि कोई भी काम पूर्ण निष्ठा, मेहनत और लगन से किया जाए तो सफलता अवश्य ही मिलती है।

प्रेरक-प्रसंग : छिन्द्रपाल विरदी

मानव को जोड़ने से देश जुड़ेगा

सन्त विनोबा जी एक कॉलेज के छात्रों से बातें कर रहे थे। विनोबा जी ने छात्रों को कुछ कागज़ के टुकड़े दिए, जिन पर भारत का नक्शा बना था। उन्होंने छात्रों को कहा कि इन्हें इस प्रकार से जोड़ो कि भारत का मानचित्र बन जाए। छात्रों के काफी प्रयत्न से मानचित्र न बना। एक युवक ने साहस कर आज्ञा प्राप्त कर उन टुकड़ों को जोड़ने का प्रयास किया और उसे सही सफलता मिली। विनोबा जी ने उस युवक से पूछा कि आपने इतनी शीघ्रता से कैसे जोड़ लिया?

उस युवक ने कहा– इसके एक तरफ तो भारत का मानचित्र है और दूसरी तरफ मानव का। मैंने मानव को जोड़ा देश का अपने आप जुड़ गया।

विनोबा जी के माध्यम से यह लघुकथा सन्देश देती है कि यही हमें करना है भारतदेश जोड़ना है तो पहले मानव को जोड़ना पड़ेगा।

प्रेरक-प्रसंग : नेहा गाबा

जैसा को तैसा

भैंस और घोड़े में लड़ाई हो गयी। दोनों एक ही जंगल में रहते थे। पास-पास चरते थे और एक ही रास्ते से जाकर एक ही झरने का पानी पीते थे। एक दिन दोनों लड़ पड़े। भैंस ने सींग मार-मारकर घोड़े को अधमरा कर दिया।

घोड़े ने जब देखा कि वह भैंस से जीत नहीं सकता, तब वह वहाँ से भागा। वह मनुष्य के पास पहुँचा। घोड़े ने उससे अपनी सहायता करने की प्रार्थना की।

मनुष्य ने कहा– भैंस के बड़े-बड़े सींग हैं। वह बहुत बलवान है। मैं उससे कैसे जीत सकूंगा?

घोड़े ने समझाया– मेरी पीठ पर बैठ जाओ। एक मोटा डंडा ले लो। मैं जल्दी-जल्दी दौड़ता रहूंगा। तुम डंडे से मार-मारकर भैंस को अधमरा कर देना और फिर रस्सी से बांध लेना।

मनुष्य ने कहा– मैं उसे बांधकर भला क्या करूंगा?

घोड़े ने बताया– भैंस बड़ा मीठा दूध देती है। तुम उसे पी लिया करना।

मनुष्य ने घोड़े की बात मान ली। बेचारी भैंस जब पिटते-पिटते गिर पड़ी, तब मनुष्य ने उसे बांध लिया। घोड़े ने काम समाप्त होने पर कहा– अब मुझे छोड़ दो। मैं चरने जाऊंगा।

मनुष्य जोर-जोर से हँसने लगा। उसने कहा– मैं तुमको भी बांध देता हूँ। मैं नहीं जानता था कि तुम मेरे चढ़ने के काम आ सकते हो। मैं भैंस का दूध पीऊंगा और तुम्हारे ऊपर चढ़कर दौड़ा करूंगा।

घोड़ा बहुत रोया। बहुत पछताया। अब क्या हो सकता था? उसने भैंस के साथ जैसा किया, वैसा फल उसे खुद ही भोगना पड़ा। ■

बातें नवीन तथ्य सम्बन्धी

★ हमारे मस्तिष्क में लगभग 86 बिलियन तंत्रिका कोशिकाएं (न्यूरॉन्स) हैं।

★ इसमें अरबों तंत्रिका फाइबर (एक्सोन और डेंड्राइट्स) शमिल हैं।

★ ये न्यूरॉन्स खरबों कनेक्शन या सिनेप्स से जुड़े होते हैं।

★ मस्तिष्क के सम्पूर्ण भार का लगभग 80% जल होता है।

★ हमारा मस्तिष्क, मस्तिष्क भित्तियों के मध्य प्रवाहित सुषुम्ना द्रव्य में इस प्रकार तैरता रहता है कि मस्तिष्क का कुल भार सिर्फ 50 ग्राम प्रतीत होता है।

★ हमारे कपाल के भीतर लगभग 1600 मिलीमीटर स्थान उपलब्ध होता है जिसमें 1500 मिलीमीटर स्थान की आवश्यकता मस्तिष्क को होती है। शेष भाग रक्त तथा सुषुम्ना द्रव्य के लिए आरक्षित रहता है।

★ मस्तिष्क को अपनी जटिल रासायनिक क्रियाओं के लिए निरन्तर ऊर्जा की आवश्यकता होती है। इसलिए मस्तिष्क अपनी ऊर्जा के लिए केवल ग्लूकोज को ही प्रयोग में लाता है न कि वसा एवं वसीय तत्वों को।

★ साथ ही मस्तिष्क के लिए रक्त के माध्यम से अनवरत ऑक्सीजन का प्रवाह भी नितान्त आवश्यक है क्योंकि ऑक्सीजन के अभाव में तीन या चार मिनट के भीतर ही मस्तिष्क का अधिकांश भाग क्षतिग्रस्त हो उठता है।

– प्रस्तुति : विभा वर्मा (वाराणसी)

कहानी : विपिन कुमार

पछतावा

बंटी बंदर दो दिनों से अस्पताल में भर्ती है। उसके एक पांव की हड्डी टूट गई है तथा पूरे शरीर में काफी चोट आई हैं। अस्पताल के डॉक्टरों के अनुसार बंटी बंदर को कम से कम दो सप्ताह अस्पताल में ही रहना पड़ेगा।

बंटी बंदर ने यह आफत जान-बूझकर मोल ली। अभी एक महीना पूर्व ही उसने काफी जिद्द करके अपने पिताजी से नई साइकिल खरीदवाई थी।

वास्तव में घर के किसी भी सदस्य की इच्छा बंटी बंदर को साइकिल खरीदकर देने की नहीं थी। माँ समझाती– बेटा, अभी छोटे हो।

पिताजी कहते– पहले साइकिल चलाना सीख लो। फिर खरीद देंगे ...।

बंटी ने किसी की बात नहीं मानी। एक दिन तो उसने साइकिल के लिए लगभग भूख-हड़ताल ही कर दी।

साइकिल आते ही बंटी बंदर के पांव अब जमीन पर नहीं पड़ते। वह साइकिल चलाता तो लगता कि हेलीकॉप्टर उड़ा रहा हो। साइकिल से तरह-तरह के खिलवाड़ करता। कभी दूसरे साथियों से रेस लगाता तो कभी व्यस्त सड़क पर भी हैंडल छोड़कर साइकिल चलाता। साइकिल चलाते वक्त न तो वह सड़क के दाएं-बाएं का ख्याल करता, न ही ब्रेक एवं घंटी लगाता।

एक दिन वह इतनी तेजी से साइकिल चलाते हुए स्कूल कैम्पस में प्रवेश किया कि स्कूल की हेड मिस्ट्रेस रानी बंदरिया के पांव पर ही साइकिल चढ़ा दी। रानी बंदरिया के पांव में मोच आ गई। बाल-सुलभ गलती मानते हुए हेड मिस्ट्रेस ने डांट-डपटकर छोड़ दिया।

किन्तु अगले ही दिन उसने पीलू खरगोश को धक्का मार दिया। पीलू खरगोश विद्यालय का बहुत ही सीधा एवं पढ़ने में तेज छात्र था। साइकिल के धक्के से पहले से ही बीमार चल रहे पीलू खरगोश की पीठ में काफी चोटें आई। दर्द से परेशान पीलू कई दिनों तक स्कूल नहीं आया।

पीलू खरगोश के पिताजी वकील थे। आकर हेड मिस्ट्रेस से बंटी बंदर की शिकायत कर गये। मैडम ने बंटी बंदर को रेड कार्ड थमा दिया। रेड कार्ड पाते ही बंटी बंदर के पिताजी स्कूल आए। उन्होंने मैडम एवं पीलू खरगोश के वकील पिता से माफी मांगी।

–मैं आप दोनों से अपने बेटे की गलती के लिए क्षमा मांगता हूँ। अब बंटी दोबारा ऐसी गलती नहीं करेगा।

लेकिन बंटी कब मानने वाला था। एक दिन उसने सड़क के किनारे खड़े एक रिक्शे में पीछे से धक्का मार दिया। जब रिक्शेवाले ने उसे डांटा तो वह उससे लड़ने के लिए तैयार हो गया।

किन्तु दो दिन पूर्व ही बंटी बंदर को सजा मिल ही गई। स्कूल की छुट्टी की घंटी बजते ही बंटी बंदर ने साइकिल स्टैण्ड से साइकिल निकालकर तेजी से पेडल मारना शुरू कर दिया। वह इतनी तेजी से साइकिल चला रहा था कि देखने वाले दंग थे। ट्रैफिक पुलिस इंस्पेक्टर राजू भालू ने आवाज दी– इतनी तेजी से साइकिल मत चला, वरना ...।

बंटी बंदर पर तो मानो तेज साइकिल चलाने का भूत सवार था। उसके घर के रास्ते सड़क पर एक अंधा मोड़ था। दूसरी ओर से आ रही एक जीप का ड्राइवर हॉर्न बजा रहा था।

बंटी बंदर तेज साइकिल चलाने में इतना मशगूल था कि उसने उधर बिल्कुल ही ध्यान नहीं दिया और जीप से टकरा गया।

बंटी बंदर की साइकिल जीप की टक्कर से एकदम चकनाचूर हो गई और बंटी बंदर सड़क से दूर जा गिरा। वह बेहोश हो गया। अस्पताल लाने पर जांच के बाद डॉक्टरों ने बताया कि उसके एक पांव की हड्डी टूट गई है।

अस्पताल में पड़े बंटी बंदर को दर्द के बीच भी रह-रहकर अपनी गलती पर पछतावा हो रहा है। वह अपने आप ही बडबडाता

कविता : डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी
2 अक्टूबर (गाँधी जयन्ती) पर विशेष

महात्मा बापू

भारत के स्वातंत्र्य युद्ध के थे जितने सेनानी।
उनमें थे अग्रणी महात्मा गाँधी, नेता मानी।

उनका निश्चय सदा अटल था, जो कहते करते थे।
उनके समक्ष सत्ताधारी, अंग्रेज सदा डरते थे।

सत्य, अहिंसा, प्रेम रहा, उनके जीवन का नारा।
आजादी हम प्राप्त करेंगे, तोड़ फिरंगी कारा।

ईश्वर पर विश्वास अटल था, कभी नहीं डरते थे।
अपनी बातें मनवाने को, अनशन वे करते थे।

मातृभूमि के लिए अन्त तक, हम संघर्ष करेंगे।
जीते जी गोरों के आगे, बिल्कुल नहीं झुकेंगे।

हिन्दी भाषा के प्रेमी थे, हिंसा के सदा विरोधी।
भेदभाव से दूर, शान्तप्रिय, अनुपम, अनघ, अक्रोधी।

चरखा और स्वेदशी, सत्याग्रह के थे अभिमानी।
मुक्त कराएं देश यही, सौगन्ध हृदय में ठानी।

आओ! हम सब गाँधी जी की राह पर बढ़ते जाएं।
विश्व-वंद्य बापू जी के, सन्देश को हम अपनाएं।

सच्चे वीर

बाल रचना:
डॉ. विजयप्रकाश त्रिपाठी

काम दिया जो विद्यालय में,
उसको कल पर टालो न।
तुरन्त काम करके दिखलाओ,
और किसी पर डालो न।।

गुस्सा करना बुरी बात है,
झगड़ा व्यर्थ बढ़ाओ न।
चुगली करके कभी किसी की,
झूठी बात बनाओ न।।

सदा सत्य पर चलकर तुम,
मन की शक्ति और बढ़ाओ।
मित्र, गुरु और मात-पिता से,
सच्चे सेवा वीर कहाओ।।

भाई-बहन से मिलजुल रहकर,
सदा प्रेम के पेंग बढ़ाओ।
आपस में मिल ज्ञान बढ़ाओ,
जग में सुन्दर नाम कमाओ।।

रोचक जानकारी : चन्द्रभान निरंकारी

वृक्षों का रोचक, अद्भुत एवं विचित्र संसार

दूध देने वाला वृक्ष : दक्षिणी अमेरिका के घने जंगलों में उगने वाले 'काऊ ट्री' जिसकी ऊँचाई लगभग 100 फीट होती है के तने में छेद करने से दूध के समान सफेद पदार्थ निकलने लगता है, जो गाय के दूध के स्थान पर प्रयुक्त होता है। यह दूध जिसे 'नायलैंस मिल्क' कहते हैं, बहुत ही स्वादिष्ट और पौष्टिक होता है।

अग्नि उगलने वाला वृक्ष : जापान के घने वनों में पाया जाने वाला यह आग उगलने वाला वृक्ष जिसे 'फायर बर्सटिंग ट्री' के नाम से पुकारा जाता है। सूर्यास्त के समय अपनी चोटी से एक विचित्र प्रकार का जहरीला तथा प्रदूषित धुआं छोड़ता है जिसके फलस्वरूप उसके चारों ओर आग उगलने लगती है।

मार्गदर्शक वृक्ष : यह विचित्र मार्गदर्शक 'पाथ गाइडिंग ट्री' दक्षिण अफ्रीका में पाया जाता है। इस पेड़ की पत्तियां हमेशा उत्तर की ओर झुकी रहती हैं। अन्धकार में भी पत्तियों को हाथ लगाकर यात्री दिशा का ज्ञान प्राप्त करते हैं। इस प्रकार यह वृक्ष यात्रियों का मार्गदर्शन करता है।

जलवर्षक वृक्ष : यह जलवर्षक वृक्ष इन्डोनेशिया के सुमात्रा द्वीप में पाया जाता है। गर्म क्षेत्र में उगने वाला यह रेनफाल ट्री जिसे 'समानीसमन' के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। दिन में अपनी कलियों में पानी इकट्ठा कर लेता है और शाम को घनी वर्षा के रूप में छोड़ देता है।

सुगन्ध-दुर्गन्ध वृक्ष : यह सुगन्ध-दुर्गन्ध वृक्ष जिसे अंग्रेजी में 'फैगेरंस समैल ट्री' कहा जाता है। यह वृक्ष डेनमार्क में पाया जाता है। इस वृक्ष से रात के समय मोहक, मनोहारी तथा मधुर सुगन्ध निकलती है। दिन में यह सुगन्ध दुर्गन्ध के रूप में परिवर्तित हो जाती है।

सजीव टार्च वृक्ष : पेरू के कार्डिलेरा पर्वतों और बालविया प्रदेश में उगने वाले इस वृक्ष को 'टार्च बीयर ट्री' कहा जाता है। इस वृक्ष की कलियों से भरी 33 फुट तक ऊँची डाली होती है जो 'राल' (रेजिन) से इतनी भरी होती हैं कि ग्रामीण क्षेत्रों में चरवाहे अपने लिए प्रकाश करने के लिए इसे जलाते हैं।

हँसने वाला वृक्ष : अफ्रीका के जंगलों में एक ऐसा वृक्ष पाया जाता है जिसके फलों पर यदि आटा डाला जाए तो वृक्ष से हँसने की आवाज उत्पन्न होती है। दक्षिण अमेरिका में भी ऐसा ही एक वृक्ष पाया जाता है जिसे हिलाया जाए तो जोर-जोर से हँसने की आवाज होती है। इसे 'लॉफिंग ट्री' भी कहते हैं।

दाढ़ी बनाने में सहायक वृक्ष : 'सोप वाइन' नामक बेल हो या 'सोप बेरी बुश' व 'सोप बार्क ट्री' पेड़ हो इनकी सतहें ब्लेड की धार की तरह पैनी होती है। जहाँ इसकी पत्तियां साबुन जैसे झाग उत्पन्न करती हैं, वहीं ब्लेड का कार्य भी करती हैं।

कीड़े खाने वाले पौधे

बहुत से कीट-पतंगे, पेड़-पौधों की पत्तियां, फल, पराग, मधु आदि खाकर जीवित रहते हैं परन्तु इसके विपरीत ऐसे पौधे भी होते हैं जो कीट-पतंगों को अपना आहार बनाते हैं। ऐसे पौधे ऐसी मिट्टी पर उगते हुए पाए गए हैं जिसमें इन पौधों के लिए आवश्यक खाद्य-सामग्री नहीं होती। कीड़े खाने से उनकी यह कमी पूरी होती रहती है। तुम्बी लता, वीनस फ्लाईट्रैप और डायोनिया ऐसे ही पौधे हैं। आओ, देखें ये कीट-पतंगों को कैसे पकड़ते हैं और कैसे उन्हें अपना भोजन बना लेते हैं।

तुम्बी लता : हमारे देश में तुम्बी लता असम में पाई जाती है। इसकी पत्तियों के सिरे आकार में घड़े या तुम्बी जैसे होते हैं। ये घड़े जैसे रंगीन होते हैं और इनके मुँह और ढक्कन पर मधु लगा होता है। कीड़े रंग से आकर्षित होकर मधु पीने आते हैं और सुस्त होकर घड़े में गिर जाते हैं। घड़े के पेंदे में पानी जैसा तरल पदार्थ होता है। इसमें पड़े-पड़े उसके शरीर के सभी भोज्य पदार्थ घड़े की दीवार सोख लेती है।

ड्रॉसेरा : दूसरे प्रकार का कीट-भक्षी पौधा ड्रॉसेरा है। इसमें भी कीड़े पकड़ने का उपाय पत्तियों द्वारा किया जाता है। पत्तियां चम्मच जैसी होती हैं और उस पर गोल-गोल सिरेवाले लाल रंग के बहुत से बाल होते हैं। कीड़ा रंग से आकर्षित होकर ज्यों ही उस पर बैठता है, बाल जैसी आकृतियां उस पर झुककर उसे जकड़ लेती हैं। कीड़ा इसी दशा में पचा लिया जाता है। इसके पचने के बाद बाल जैसी आकृतियां सीधे हो जाते हैं और कीड़े के शरीर के बचे हुए कड़े भाग हवा चलते ही उड़ जाते हैं।

प्रस्तुति : साक्षी वाधवानी

आलेख: जयेन्द्र

बड़े दांतों वाला बबीरुसा

बच्चों! यह बात तो तुम अच्छी तरह जानते ही हो कि दुनिया में अजब-अनोखे पशु-पक्षी भी पाये जाते हैं। यहाँ एक ऐसे ही अजूबे पशु 'बबीरुसा' का जिक्र है।

इंडोनेशिया के 'मौलूका' और 'सेलेक्स' नामक टापुओं पर 'बबीरुसा' नामक एक अनोखा सूअर पाया जाता है। यह एक तरह का अजूबा जंगली सूअर है तथा दुनिया की विभिन्न प्रजातियों के सूअरों से बिल्कुल भिन्न है। इसकी आकृति गधे की तरह होती है। वर्ण गहरा लाल, कत्थई, चितकबरा या काला भी होता है। इसके दांत बहुत पैने और बड़े-बड़े होते हैं।

यह अक्सर दलदली जंगलों में समूह में रहता है। नर बबीरुसा का ऊपरी दांत विचित्र प्रकार का घुमाव लेकर थूथन से शुरू होकर माथे तक जाता है। श्वदंत 50 से.मी. तक लम्बे होते हैं। मादाओं के मुँह पर **केवल मांस की गांठे होती हैं। वे हरी वनस्पति की जड़ों, कन्दमूल और फलों को खाती हैं।**

इनमें बच्चे की दर बहुत कम होती है। मादा बबीरुसा एक समय में केवल एक या दो बच्चों को ही जन्म देती है। वह इनकी सेवा रक्षा 20-25 दिनों तक करती है। अपना दूध पिलाती है तथा किसी गड्ढे में छिपाकर रखती है ताकि हिंसक पशु एकाएक इनका शिकार न कर सके।

नर बबीरुसा गधे की तरह बड़ा सुस्त और सनकी मिजाज का होता है। घंटों तक वह एक जगह खड़ा या बैठा रहता है। मादा के खदेड़ने पर वह उठकर घास कन्दमूल खाकर पेट भरता है। कई बार यह घंटों तक अपनी भाषा में गधे की तरह कर्कश आवाजें भी निकालता रहता है। इसकी औसत उम्र 8 वर्ष होती है। इसकी खाल व दांतों से कई सजावटी सामग्री तैयार की जाती है। इसके शरीर के बालों से ब्रुश बनाये जाते हैं। **यह एक अच्छा तैराक भी होता है। यह अपने दांतों की बदौलत शत्रुओं को मार भगाता है।**

कविता : कीर्ति श्रीवास्तव

मेला

माँ मुझे बस मेला दिखा दे।
हाथ पकड़ कर मुझे घुमा दे।

झूले बहुत ऊँचे-नीचे हैं,
अपनी ओर मुझे खीचे हैं।
पर माँ तू न घबराना,
मन को भी तू न दुखाना।

न बोलूँगा मुझे झुला दे,
माँ मुझे बस मेला दिखा दे।

सर्कस में जोकर आया है,
हाथी, घोड़े साथ लाया है।
बंदर भी साइकिल चलाए,
मेरे दोस्त ये मुझे बताएँ।

फिरकी एक मुझे दिला दे।
माँ मुझे बस मेला दिखादे।।

रंग-बिरंगे गुब्बारे हैं,
चाट पकौड़े चटखारे हैं।
खर्चा नहीं कराऊँगा,
न ही मैं ललचाऊँगा।

बर्फ का इक गोला खिला दे।
माँ मुझे बस मेला दिखा दे।

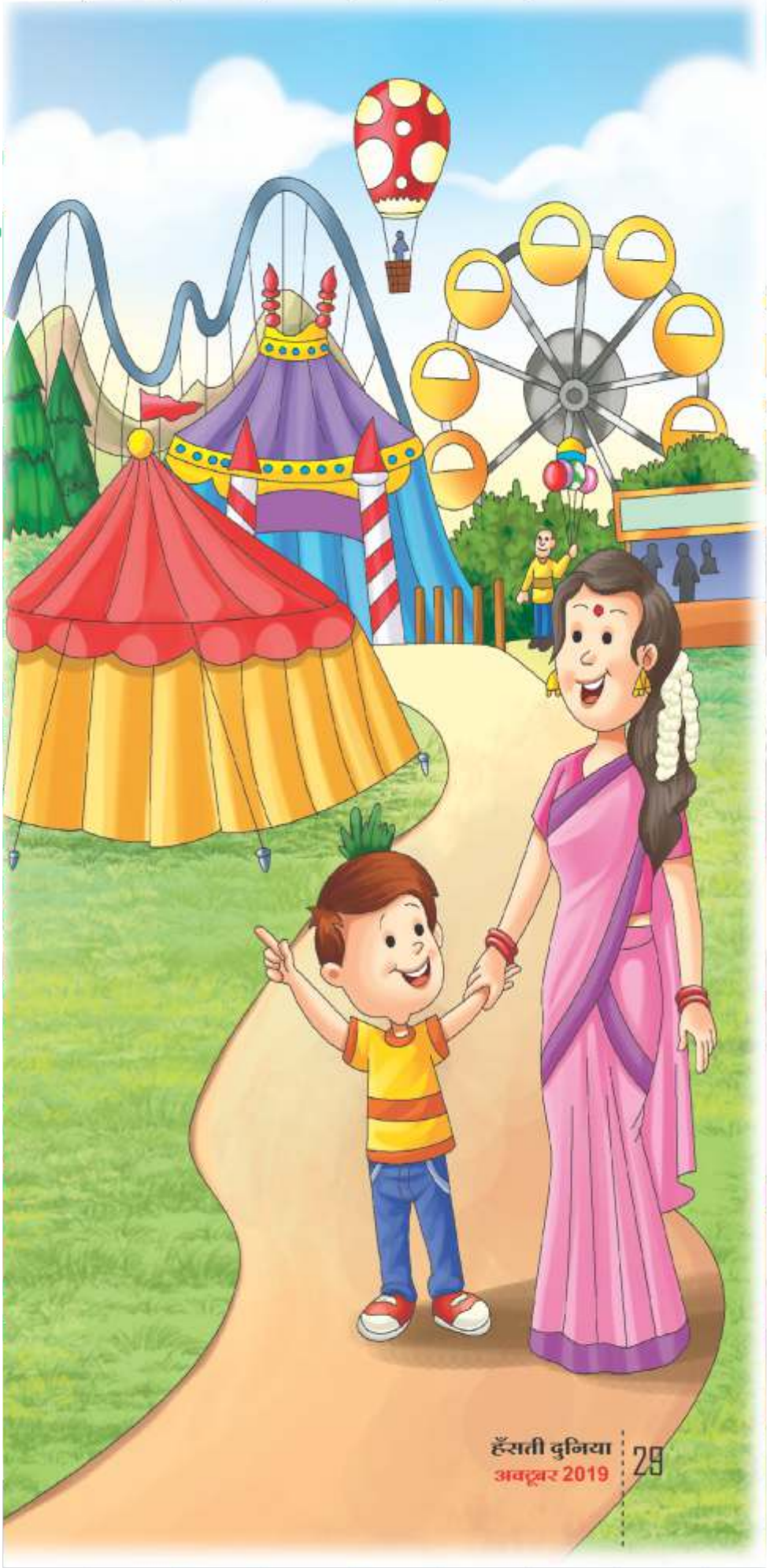

वैज्ञानिक जानकारी : डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल (गुरुग्राम)

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न : आकाश नीला क्यों दिखाई देता है?

उत्तर : सूर्य के प्रकाश में सात रंग पाये जाते हैं। जब सात रंगों वाला यह प्रकाश वायुमण्डल के कणों से टकराता है तो रंगों में विचलन की क्रिया प्रारम्भ हो जाती है। बैंगनी, नीले या आसमानी रंग का विचलन सबसे अधिक होता है और शेष रंगों (हरा, पीला, नारंगी तथा लाल) का विचलन कम। उपयुक्त तीन रंगों के विचलन से लगभग नीले रंग की ही उत्पत्ति होती है। अत: आकाश नीला दिखाई देता है।

प्रश्न : इन्द्रधनुष वर्षा के बाद ही क्यों दिखाई देता है?

उत्तर : कांच के तिकोने टुकड़े को प्रिज्म या त्रिपार्श्व कहते हैं। जब सूर्य का प्रकाश प्रिज्म के एक फलक पर पड़ता है तो प्रकाश विभाजित होकर सात रंगों में बंट जाता है। यह क्रिया विक्षेपण कहलाती है। इन्द्रधनुष का बनना भी इसी क्रिया का एक उदाहरण है। वर्षा रूकने के बाद वायुमण्डल में पानी की बूंदें उपस्थित रहती हैं। जब सूर्य का प्रकाश इन बूंदों पर पड़ता है तो बूंदें प्रिज्म का काम करने लगती हैं और सूर्य के प्रकाश को सात रंगों में विभाजित कर देती हैं। अत: इन्द्रधनुष बन जाता है।

प्रश्न : पानी से भरे टब में तल पर रखा हुआ सिक्का तुम्हें उठा हुआ क्यों प्रतीत होता है?

उत्तर : वह भौतिक साधन जिसमें से प्रकाश गुजरता है, माध्यम कहलाता है। माध्यम दो प्रकार के होते हैं– विरल तथा सघन। वायु विरल माध्यम है जबकि कांच तथा पानी सघन माध्यम के उदाहरण हैं। अपवर्तन के कारण जब प्रकाश की किरणें सघन माध्यम से चलकर विरल माध्यम में प्रवेश करती हैं तो अभिलम्ब से दूर हट जाती हैं। बस, इसलिए बाहर से देखने पर पानी से भरे हुए टब में तल पर रखा हुआ सिक्का तुम्हें उठा हुआ प्रतीत होता है।

प्रश्न : शर्बत बनाने के लिए पानी में पहले चीनी डालकर फिर बर्फ क्यों मिलाई जाती है?

उत्तर : शर्बत बनाने के लिए पानी में चीनी और बर्फ मिलाई जाती है। किंतु, पानी में पहले बर्फ न डालकर चीनी ही डाली जाती है। यदि शर्बत बनाने के लिए बर्फ पहले डाल दी जाए तो पानी का तापमान कम हो जाएगा और पानी (विलायक) की घोलने की शक्ति (विलायकता) कम हो जाएगी। अत: चीनी ठीक ढंग से नहीं घुलेगी।

कहानी : प्रमीला गुप्ता

नया सवेरा

घुम्मर गाँव के लोग बहुत सीधे-सादे थे। पढ़ाई-लिखाई से कोसों दूर, उनके लिए काला अक्षर भैंस बराबर था। पढ़ा-लिखा धनपत साहूकार उनकी इस कमजोरी का फायदा उठा रहा था। कहने को वह साहूकार था पर था बड़ा लालची। जरूरत पड़ने पर वह गाँववालों के घर-जमीन आदि गिरवी रखकर ऊँची ब्याज दर पर रकम उधार दे देता था। झूठी लिखा-पढ़ी पर वह उनसे अंगूठा लगवा लेता था। एक बार उधार ले लेने के बाद गाँववाला जिन्दगी भर उसके कर्ज तले दबा रहता।

सज्जन सिंह की गाँव में राशन की छोटी-सी दुकान थी। थोड़ा हिसाब-किताब करना जानता था। ईमानदारी से चार पैसे कमाकर अपने परिवार का भरण-पोषण करता और खुश रहता। पढ़ा-लिखा होने के कारण वह धनपत की काली करतूतों को जानता था। एक दिन उसने सरपंच के पास जाकर धनपत साहूकार की शिकायत की। सरपंच खुद धनपत की बेईमानी का बराबर का हिस्सेदार था। उसने सज्जन सिंह की बातों को सुना-अनसुना कर दिया।

थक-हारकर सज्जन सिंह ने जिला मुख्याधिकारी के पास जाने का फैसला किया। उसने उनके पास जाकर कहा– श्रीमान्! गाँव का सरपंच और धनपत साहूकार मिलकर भोले-भाले अनपढ़ गाँववालों को लूट रहे हैं। वे दोनों दिन पर दिन अमीर होते जा रहे हैं और गरीब गाँववालों के लिए पेट भरना मुश्किल हो गया है। उनकी सारी कमाई कर्ज का सूद भरने में ही

खत्म हो जाती है। अनपढ़ गाँववाले मजबूरी में झूठी लिखा-पढ़ी पर अंगूठा लगा देते हैं।

मुख्याधिकारी ने सज्जन सिंह की बातों को ध्यान से सुना। उसने अपने दो कर्मचारियों को धनपत साहूकार और सरपंच की चुपचाप जांच-पड़ताल करने के लिए भेज दिया। कर्मचारियों ने आकर बताया कि सज्जन सिंह की सभी बातें सही थीं। मुख्याधिकारी ने तुरन्त दोनों की शिकायत पुलिस अधीक्षक से की। दोनों को बंदी बनाकर अदालत में पेश किया गया। दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद जज ने फैसला सुनाया– धनपत साहूकार और सरपंच ने ग्रामीणों से जालसाजी और बेईमानी की है। बेईमानी से हड़पा गया धन ग्रामीणों को वापिस करे।

न्यायालय के फैसले से सज्जन सिंह और गाँववाले बहुत खुश थे। अब मुख्याधिकारी ने आदेश दिया– जिले के प्रत्येक गाँव में बाल विद्यालय तथा प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों की जल्दी से जल्दी स्थापना कर उनमें योग्य शिक्षक नियुक्त किए जाएं।

यह सुनकर सज्जन सिंह हैरानी से पूछने लगा– श्रीमान्! अपराधियों को सजा मिल गई है। अब बाल विद्यालय तथा प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र खोलने से क्या लाभ होगा?

मुख्याधिकारी ने हँसकर बताया– सज्जन सिंह, तुम जानते हो कि गाँव के ज्यादातर लोग अनपढ़ और सीधे-सादे होते हैं। धनपत साहूकार और सरपंच को सजा देने से समस्या मिट नहीं जाएगी। अनपढ़ गाँववालों को कोई भी धनपत जैसा लालची व बेईमान साहूकार ठग सकता है। इसलिए गाँव के बच्चों और बुजुर्गों का शिक्षित होना जरूरी है।

सज्जन सिंह खुश होकर बोला– श्रीमान्! यह तो आपने बहुत दूर की बात सोची है। हम सब गाँववाले आपके इस उपकार को हमेशा याद रखेंगे।

–यह उपकार नहीं, मेरा कर्त्तव्य है। यही नहीं, मैंने अपने उच्चाधिकारियों के पास के गाँवों में ग्रामीण बैंक खोलने का प्रस्ताव भेजा है। ऐसा हो जाने पर गाँववाले कर्ज के लिए साहूकारों के चंगुल में नहीं फंसेंगे। मुख्याधिकारी ने बताया।

सज्जन सिंह की खुशी का ठिकाना नहीं था। अब उसके गाँव में अज्ञानता का अंधकार नहीं रहेगा। ज्ञान का प्रकाश फैलेगा। एक नया सवेरा सारे गाँव को खुशियों से भर देगा।

बालगीत : डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल

मुझको यह बतलाओ माँ!

शंका दूर भगाओ माँ।
मुझको यह बतलाओ माँ।

मेघ कहाँ से लाए पानी,
सूर्य कहाँ से ले उजियारा।
चाँद रात में ही क्यों निकले,
चमके क्यों हर एक सितारा।

ठीक-ठाक समझाओ माँ।
मुझको यह बतलाओ माँ।

देता कौन फूल को खुशबू,
कैसे मिले रंग तितली को।
कौन मिठास फलों में घोले,
कैसे चमक मिले बिजली को।

कारण सम्मुख लाओ माँ।
मुझको यह बतलाओ माँ।

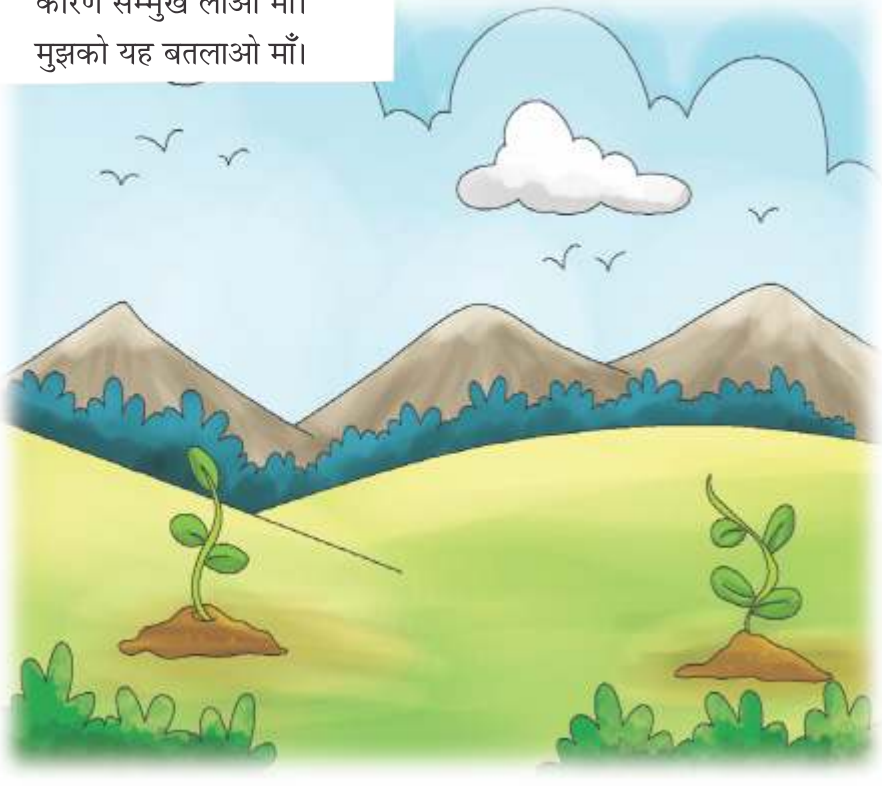

इन्द्रधनुष कैसे बन जाता,
बीज कहाँ से भोजन पाएं।
जुगनू क्यों चमका करते हैं,
पंछी रातें कहाँ बिताएं।

देरी नहीं लगाओ माँ।
मुझको यह बतलाओ माँ।

हवा कहाँ से लेती ठंडक,
सरिता क्यों बहती रहती है।
आसमान क्यों होता नीला,
धरती क्यों विपदा सहती है।

मिलकर हँसो-हँसाओ माँ।
मुझको यह बतलाओ माँ।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

इतना कहकर किट्टी वहाँ से जाने लगी तो उसके तीनों दोस्त हैरान होकर उसे देखने लगे।
अरे, किट्टी को समझाओ।
चिंटू, किट्टी कहाँ है?
मैम... किट्टी आज स्कूल नहीं आई, वह बहुत बीमार है।

अरे! यहाँ कितना मजा आ रहा है। अच्छा हुआ जो मैंने स्कूल 'बंक' किया, नहीं तो मैं इतने मज़े नहीं कर पाती।
अरे! ये तो किट्टी लग रही है, लेकिन ये यहाँ कैसे? मुझे पार्क के अन्दर जाकर देखना होगा।
अरे! नहीं, ये तो मम्मी है, भागो...

अरे! कहाँ भाग गई ये किट्टी?
मैं जल्दी से यहाँ छिप जाती हूँ ताकि मम्मी मुझे देख न सके।
चल मेरे डॉगी, टिक-टिक-टिक...
अरे नहीं, भागो... ये डॉगी तो मेरे पीछे ही पड़ गया। बचाओ, बचाओ... कोई मुझे बचाओ...
मम्मी... मुझे बचाओ।
किट्टी तुम यहाँ कैसे? तुम स्कूल क्यों नहीं गई। चलो अब घर तुम्हारे पापा से मैं तुम्हारी शिकायत करती हूँ।
वो... वो... मम्मी। मुझे माफ कर दो, मैं फिर कभी ऐसा नहीं करूंगी। रोजाना स्कूल जाऊंगी।

संग्रहकर्ता : रीटा (दिल्ली)

कभी न भूलो

★ उत्तम शिक्षा कहीं से भी मिले तो लेने में संकोच नहीं करना चाहिए। – चाणक्य

★ धैर्य तो विवेक का साथी है। ताकत और दबाव की तुलना में धीरज रखकर अधिक पाया जा सकता है। –ला फोंटेन

★ सब्र जिन्दगी के मकसद का दरवाजा खोलता है क्योंकि सिवाय सब्र के उस दरवाजे की कोई कुंजी नहीं है। – शेख सादी

★ दूसरों का जो आचरण तुम्हें पसंद नहीं है, वैसा आचरण तुम भी दूसरों के प्रति मत करो। – कन्फ्यूशियस

★ जिस घर में छोटे-बड़े सब मिलकर रहते हैं, वह घर अपने बल पर सदा सुरक्षित रहता है। – अथर्ववेद

★ जब-जब हम गिरते हैं हमें आगे चलने का तजुर्बा हो जाता है। – सुकरात

★ पड़ोसी से प्रेम करने वाला विपत्ति में भी सुखी रहता है, जबकि पड़ोसी से वैर करने वाला सम्पत्ति में भी दु:खी रहता है। – रामप्रताप त्रिपाठी

★ जिसके साथ सत्य है, वह अकेला होता हुआ भी बहुमत में है। – शेक्सपियर

★ कभी-कभी हमें उन लोगों से भी शिक्षा मिलती है जिन्हें हम अभिमानवश अज्ञानी समझते हैं। – प्रेमचन्द

★ लोगों को सच्चा लोकतंत्र या स्वराज कभी भी असत्य और हिंसा से प्राप्त नहीं हो सकता। – लाल बहादुर शास्त्री

★ सच्चा प्रयास कभी निष्फल नहीं होता।– विल्सन

★ उस दिन को बेकार ही समझो, जिस दिन तुम हँसे नहीं। – चेम्सफोर्ड

★ व्यक्ति अपने विचारों से निर्मित एक प्राणी है, वह जो सोचता है वही बन जाता है। – महात्मा गाँधी

★ जो वाणी मनुष्य को मनुष्य से जोड़े, मनुष्य के दिल में दूसरे के लिए प्यार, भाईचारा और नम्रता की भावनाएं उजागर करे, वही सही वाणी है। – ऋग्वेद

★ जो गुणी होते हैं, वे अपनी जिम्मेदारियों की बात सोचते हैं। जो गुणहीन होते हैं, वह अपने अधिकार का नाम रटा करते हैं। – रवीन्द्रनाथ टैगोर

★ ज्ञानी मनुष्य की दृष्टि दूसरों की अच्छाइयों पर पड़ती है जबकि मूर्ख लोग दूसरों के अवगुण टटोलते हैं। – विनोबा भावे

★ जो कार्य जितनी नेकनीयत से किया जायेगा, उतना ही श्रेष्ठ होगा। – महात्मा बुद्ध

★ जो कुछ तुम आज कर सकते हो, उसे कल के भरोसे पर कभी मत छोड़ो। – फ्रैंकलिन

★ बुरी सोहबत से उसका न होना ही अच्छा है, क्योंकि हम दूसरों के गुणों की अपेक्षा दोषों को जल्दी ग्रहण कर लेते हैं। – स्वामी विवेकानन्द

★ गुस्से का सर्वोत्तम उपचार विलम्ब है। – सेनेका

★ जुबान की अपेक्षा जीवन से उपदेश देना कहीं अधिक प्रभावकारी है।– स्वामी दयानन्द सरस्वती

दो बाल कविताएं : मीरा सिंह 'मीरा'

छोड़ो आलस

किरणें घर में देती दस्तक।
बच्चों सोये हो क्यों अब तक।

बांग दे रहा कब से मुर्गा।
छोड़ो आलस अब मुन्ने राजा।

मंद बहती हवा सुहानी।
कहने लगी एक नयी कहानी।

बिस्तर छोड़ो आंखें खोलो।
जल्दी से तुम नाश्ता कर लो।

लेकर आओ अपना बस्ता।
जल्दी पकड़ो स्कूल का रास्ता।

प्यारा बचपन

प्यारा प्यारा सुन्दर बचपन।
कितना सुहाना लगता बचपन।

रूठे हैं हँसकर माने कभी।
लुका-छिपी मिल खेलें सभी।

मन की कड़वाहट भुलाकर।
रहते आपस में हिल मिलकर।

सुखद सुहाने वो प्यारे दिन।
बचपन के क्या न्यारे दिन।

वो प्यारा बचपन लौटा दो।
जीना सुन्दर सहज बना दो।

प्रेरक कहानी : अर्चना सौगानी

जीवन की उपयोगिता

दक्षिण भारत के महान दार्शनिक एवं कवि तिरुवल्लुवर फुर्सत के क्षणों में प्रकृति की हसीन वादियों का पैदल भ्रमण किया करते। कुदरत के बेहतरीन नजारे देखकर उनके मस्तिष्क में नई-नई कल्पनाएं उपजा करतीं और वे साहित्य के प्रति कुछ नया सन्देश अपने मन में सोच लिया करते। उन्होंने प्रकृति के रंगों में भीगी अपनी रचनाओं में प्रकृति के श्रृंगार की अद्‌भुत तारीफ की है।

तिरुवल्लुवर हमेशा लोगों को सही नसीहत प्रदान किया करते। ऐसे ही एक बार वे सरिता तट पर बैठे थे। अचानक उन्होंने देखा कि एक व्यक्ति सरिता में कूदकर अपने प्राण देना चाहता है। तिरुवल्लुवर ने दौड़कर उसे पकड़ लिया तो उसने शिकायत की– 'जिस जीवन की कोई सार्थकता न हो, उसकी रक्षा करने से क्या लाभ?'

तिरुवल्लुवर बोले– 'देखो, इस दुनिया में धूल का एक कण तक निरर्थक नहीं है। अभी तुम्हें अपना जीवन अपने लिए अनुपयोगी लग रहा है, पर निजी उपयोगिता ही तो एकमात्र उपयोगिता नहीं है। अपने लिए नहीं तो दूसरों के लिए तुम उपयोगी बन सकते हो और जब तुम अपना जीवन दूसरों के लिए समर्पित कर दोगे, तो अपने लिए भी तुम्हारा जीवन उपयोगी सिद्ध लगेगा।

यह सुनते ही वह व्यक्ति उनके कदमों में गिरकर क्षमायाचना करने लगा और बोला– 'मेरे बड़े भ्राता। मैं जीवन का कोई सार्थक मूल्य आज तक न समझा था, लेकिन आज आपने मुझे जीवन का मूल्य भी बताया और जीने का अन्दाज भी बतलाया। हाँ, मैं आज से वादा करता हूँ, मैं अपने लिये नहीं बल्कि दीन-दुखी मानव के प्रति सच्ची श्रद्धा से सेवा करूंगा और उन्हें भी जीने की कला के गुणों से परिचित कराऊँगा।

यह सुनकर कवि तिरुवल्लुवर ने उस व्यक्ति को आशीर्वाद देते हुए कहा– **तुम्हारी हर सेवा खूब फले फूले।**

प्रेरक-प्रसंग : विभा वर्मा

मातृभूमि : धर्म और स्वर्ग से बढ़कर है

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई से पराजित होकर अंग्रेज अफसर और सैनिक भाग खड़े हुए। वे किले के पास बनी मस्जिद और मंदिर में जाकर छिप गये। अंग्रेजों को यह पता था कि मंदिर और मस्जिद हिन्दुओं और मुसलमानों के पवित्र स्थान हैं। इनको वे किसी भी कीमत पर नष्ट नहीं करेंगे।

मगर झांसी की रानी के एक मुसलमान तोपची ने अल्लाह से प्रार्थना की– या अल्लाह! अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए आज तेरे पवित्र स्थान को नष्ट कर रहा हूँ।

यह कहकर तोपची ने मस्जिद पर तोप दाग दी। देखते-देखते मस्जिद धराशायी हो गयी और उसमें छिपे अंग्रेज तत्काल मौत के मुँह में चले गये।

फिर मंदिर पर गोला दागने का उसका साहस नहीं हुआ। उसका हाथ कांपने लगा।

झांसी की रानी तत्काल उस मुसलमान तोपची की मनोदशा भांप गई और उन्होंने उसी क्षण स्वयं ही तोप मंदिर पर दाग दी।

वहाँ छिपे अंग्रेज एक पल में मौत के मुँह में चले गये और मंदिर भी तत्काल ढेर हो गया।

तब झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने कहा– **मातृभूमि धर्म और स्वर्ग से भी बढ़कर है।**

आलेख : जयेन्द्र

अलबेला पक्षी : कीवी

दक्षिणी गोलार्द्ध के हरे-भरे जंगलों में पाया जाने वाला एक सबसे छोटा पक्षी है कीवी। यूं तो इसका आकार मुर्गे जितना होता है और शरीर केवल 30-35 से.मी. लम्बा। इस पक्षी को उल्लू का भाई भी कह सकते हैं क्योंकि इसे दिन के समय कम दिखाई देता है। रात्रि के गहरे अन्धेरे में इसे साफ दिखाई देता है। इसी कारण यह रात्रि में ही भोजन की तलाश में निकलता है।

यूं तो इस पक्षी की कई प्रजातियां हैं। लेकिन कुछ खास प्रजातियां ये हैं– ग्रेट स्पोटेड कीवी, लिटल स्पोटेड कीवी, नॉर्थ आइलैंड ब्राउन कीवी, ओकोरीटो ब्राउन कीवी, सर्दर्न टोकोइका और हास्ट टोकोइका। कीवी न्यूजीलैंड का राष्ट्रीय प्रतीक चिन्ह भी है।

इस पक्षी की चोंच बहुत लम्बी, तीखी और मजबूत होती है जो इसे जमीन के अन्दर छिपे हुए कीड़े-मकोड़े को ढूंढने में मदद करती है। इसकी नाक जो चोंच के सिरे पर होती है, अपना शिकार सूंघ लेती है और उसे पकड़ने में देर नहीं लगाती।

यह पक्षी समूह में बहुत कम पाया जाता है। कई बार एक से अधिक कीवी एक ही स्थान पर जमा हो जाते हैं तो ये आपस में खूनी लड़ाइयां लड़ते हैं। अपनी लम्बी चोंच से एक-दूसरे को नोचते हैं तथा मारने का पूरा प्रयास करते हैं। इस लड़ाई में जो कीवी जीत जाता है। मादा कीवी उसी के संग होकर जीवन व्यतीत करती है। मादा कीवी एक समय में 2 या 3 अण्डे देती है और नर कीवी ढ़ाई माह तक इन्हें सेने का दायित्व निभाता है। चौकन्ना होकर रात-दिन इनकी रक्षा करता है। मौसम की मार व शत्रुओं से इन्हें बचाता है। ढाई माह के सफर के उपरान्त अण्डों में से जब चूजा निकलता है तो उसकी आँखें पूरी तरह से खुली होती हैं और शरीर पर कोमल मुलायम बाल होते हैं।

यह एक आश्चर्य की बात है कि दस दिनों तक नवजात कीवी कुछ नहीं खाता। 28-30 दिन का हो जाने पर यह अपना घर छोड़ देता है तथा शत्रुओं से अपनी रक्षा स्वयं करता है। यूं कीवी ऐसा पक्षी है जो उड़ नहीं सकता लेकिन तेजी से भाग जरूर सकता है।

अण्डों की दुनिया में कीवी के अण्डों की एक अलग पहचान भी है क्योंकि इसका एक ही अण्डा करीब 500 ग्राम का होता है। जिसका रंग सफेद या दूधिया होता है। इसकी विभिन्न प्रजातियों के अण्डे रंग-बिरंगे होते हैं। जैसे लाल, गुलाबी, श्वेत-श्याम, पीले-गुलाबी, सफेद-गुलाबी आदि। ये वजन में 200 से 300 ग्राम के मध्य होते हैं तथा बड़े चमकीले व खबूसूरत होते हैं।

लेख : डॉ. परशुराम शुक्ल

बर्फीले प्रदेश का एक अद्‌भुत जीव : ध्रुवीय लोमड़ी

लोमड़ी एक मांसाहारी वन्य जीव है। यह सम्पूर्ण विश्व में पायी जाती है। इसकी बाईस जातियां हैं; उनमें से एक है– ध्रवुीय लोमड़ी। लोमड़ी की अधिकांश जातियों के विषय में पर्याप्त जानकारी उपलब्ध है किन्तु ध्रुवीय लोमड़ी के विषय में जीव वैज्ञानिकों का ज्ञान बहुत सीमित है। अभी कुछ समय पूर्व ध्रुवीय लोमड़ी पर किये गये अध्ययन से अनेक रोचक एवं आश्चर्यजनक तथ्य प्रकाश में आये हैं।

ध्रुवीय लोमड़ी उत्तरी ध्रुवीय प्रदेशों के बर्फ से ढके भागों में पायी जाती है। इसके कान छोटे तथा गोल होते हैं और शरीर का वजन तीन किलोग्राम से लेकर नौ किलोग्राम तक होता है। ध्रुवीय लोमड़ी की पूंछ लम्बी तथा घने बालों वाली होती है। यह एकमात्र ऐसी लोमड़ी है जिसका फर मौसम के साथ रंग बदलता है। इसके शरीर का रंग गर्मियों में धूसर होता है तथा सर्दियों में बिल्कुल सफेद हो जाता है। (यह गुण अनेक ध्रुवीय प्राणियों में देखने को मिल जाता है। इससे वे अपने शत्रुओं को धोखा देने में सफल हो जाते हैं।) कुछ लोमड़ियों के फर के बालों का सिरा ही सफेद होता है, सम्पूर्ण फर नहीं।

इसका फर बड़ा कीमती होता है तथा इसी फर के लिये इसे पाला जाता है। ध्रुवीय लोमड़ी सर्दियों में अधिक ठण्ड से बचने के लिये गहरी मांद में रहती है तथा अपने द्वारा किये गये शिकार का बिस्तर बनाकर सोती है। मांद के बाहर आराम करते समय यह गेंद के आकार की बन जाती है। इस समय इसकी पूंछ थुथन पर रहती है और बर्फीली हवाओं से इसकी रक्षा करती है। यह शून्य से पैंतालिस डिग्री सेल्सियस से कम तापक्रम पर भी सरलता से रह लेती है और इतनी ठण्डक के समय भी इसे शिकार खोजने में कोई विशेष कठिनाई नहीं होती।

ध्रुवीय लोमड़ी ध्रुवीय प्रदेश में पाये जाने वाले चूहे के आकार के एक जीव लेमिंग के शिकार पर पूरी तरह निर्भर रहती है। यदि लेमिंग की संख्या बढ़ जाती है तो इसकी संख्या भी बढ़ जाती है और यदि लेमिंग की संख्या घट जाती है तो इसकी संख्या भी घटने लगती है। लेमिंग के अतिरिक्त यह ध्रुवीय गिलहरी, विभिन्न प्रकार के पक्षी और उनके अण्डे तथा सालमन मछली भी बड़ शौक से खाती है। ध्रुवीय लोमड़ी अच्छी तैराक होती है तथा निर्भय होकर घंटों पानी में तैरती है। जमीन पर रहने वाले छोटे जीवों का शिकार करते समय यह उनके बिलों का पता लगाती है और फिर अपने तेज पंजों से पूरा बिल खोद डालती है तथा अपना शिकार प्राप्त कर लेती है। यह अपने शिकार पर आक्रमण करने से पहले जमीन पर पेट के बल लेट जाती है और अपनी पूंछ दाहिने–बायें, ऊपर–नीचे पटकती है। यह ध्रुवीय भालू का काफी दूरी से पीछा करती है और उससे बचे हुए शिकार को शौक से खाती है। यह मरी हुई सील और ह्वेल को भी नहीं छोड़ती और शिकार न मिलने पर इनसे अपना पेट भरती है।

दो बाल कविताएं : कमलसिंह चौहान

सूरज की लाली

बिखर रही सूरज की लाली।
चमक रही गेंहू की बाली।
उतर रही किरणें धरती पर,
हवा चली अब हिम्मत वाली।

सुन्दर मौसम बड़े सवेरे।
चिड़िया चहकी आंगन घेरे।
खिली धूप में दादा बैठे,
सूरज करता है रखवाली।

आमों पर हैं बोर लगे।
कोयल संध्या सुबह जगे।
मटर में लगी अब फली देखो,
चिड़िया देख हुई मतवाली।

पंख समेट पक्षी उड़ते।
अपनी भाषा में कुछ कहते।
शोर मचा है आसमान में,
छलक रही धरती की प्याली।

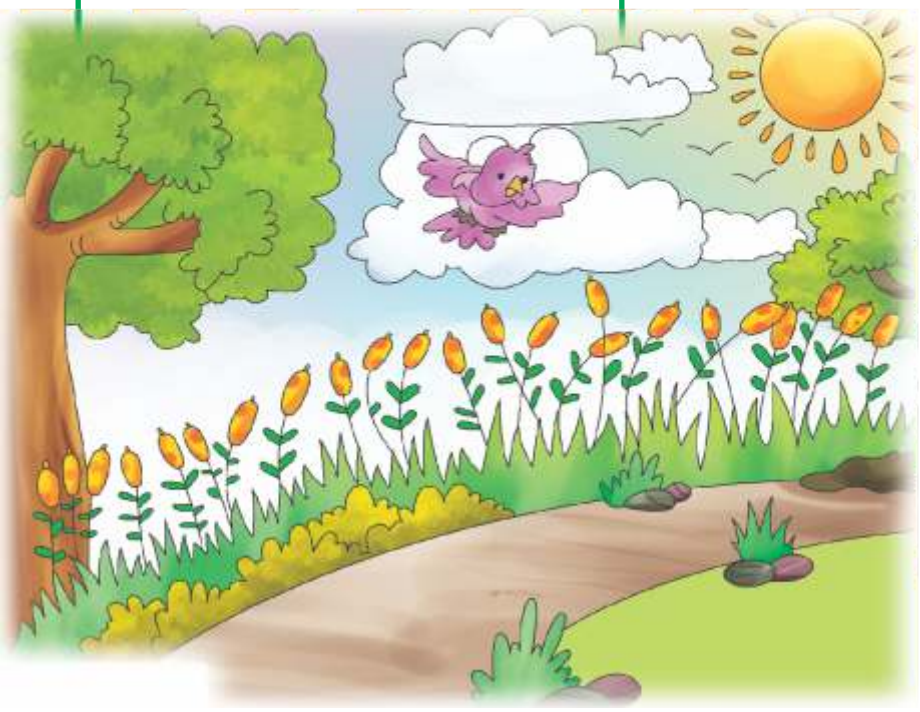

सुबह का पाठ

चहक रही है डाली डाली।
फूलों की क्यारी मतवाली।
हवा सुहानी बह निकली,
धरती ने हरी चुनर डाली।

बैलों की घंटी बज निकली।
भौरों की सज गई प्याली।
चली चिरैया दाना लेकर,
तोते ने मिरची खा ली।

खुशबू फैली खेतों में।
मेढक चहका रेतो में।
अमृत जैसी बूंदे टपकी,
नाच रहा है बगिया का माली।

सूरज आया हाथ उठाये।
गायों के बछड़े रंभाये।
चुन्नू मुन्नू पढ़ने बैठे,
सुबह का पाठ न जाता खाली।

पढ़ो और हँसो

थानेदार : (चोर से) तुमने चोरी क्यों की?
चोर : क्यों न करता सर!
थानेदार : इसका क्या मतलब है?
चोर : सर दरवाजे के बाहर लिखा था– 'शुभ स्वागतम'।

एक नेता : (अपने साथियों से) हमें कभी भी पीछे नहीं हटना चाहिए।
(दूसरे दिन)
नेता : (अपने एक साथी से) क्यों चिपककर खड़े हो, जरा पीछे हटो।
साथी : नहीं हटूंगा।
नेता : क्यों नहीं हटोगे?
साथी : आप ही ने तो कहा था कभी भी पीछे मत हटो।

चूहा : (बिल्ली से) बिल्ली मौसी! आज तुम्हारी मेरे यहाँ दावत है।
बिल्ली मौसी : जरूर-जरूर आऊँगी तुमने बुलाया जो है।
बिल्ली मौसी शाम को आई और चूहे से बोली– म्याऊँ-म्याऊँ।
यह सुनकर चूहा बोला– रूको-रूको जरा मैं छुप जाऊँ।

भिखारी : भगवान के लिए अंधे भिखारी को कुछ दे दो बाबा।
राहगीर : भीख तो दे दूं पर कैसे मानूं कि तुम अंधे हो?
भिखारी : साहब क्या सामने वाले लाल मकान की छत पर बैठा सफेद कबूतर आपको दिख रहा है?
राहगीर : हाँ, मुझे तो दिख रहा है।
भिखारी : लेकिन वह कबूतर मुझे दिखाई नहीं दे रहा है।

एक व्यक्ति : डॉक्टर साहब मेरी पत्नी को नाखून चबाने की बुरी आदत है क्या करूं?
डॉक्टर : इसमें चिन्ता की क्या बात है? अपनी पत्नी को दांतों के डॉक्टर के पास ले जाइए और सारे दांत उखड़वा दीजिए।

एक व्यक्ति होटल में भोजन करने पहुँचा।
बैरा : साहब! हमारे यहाँ आपको बिल्कुल घर जैसा ही भोजन मिलेगा।
व्यक्ति : तो फिर मैं घर जाकर ही भोजन कर लूंगा।

– प्रतीक्षा कुशवाहा (इटावा)

किरायेदार : क्या छत से हमेशा पानी टपकता है?
मकान मालिक : नहीं जनाब, सिर्फ वर्षा के दिनों में ही टपकता है।

डॉक्टर : पिछली बार याददाश्त बढ़ाने के लिये जो दवा ले गये थे। उससे कुछ फर्क पड़ा?
मरीज : अभी तक कुछ फर्क नहीं पड़ा, रोज दवा लेना ही भूल जाता हूँ।

अध्यापक : (छात्रों से) खानवा का युद्ध किनके बीच हुआ था?
(एक छात्र तेजी से खड़ा हुआ।)
अध्यापक : हाँ बताओ?
छात्र : सर, मेरे बीच नहीं हुआ था।

अध्यापक : (रामू से) भाईचारा शब्द को वाक्य में प्रयोग करो।
रामू : जब मैंने दूध वाले से पूछा कि दूध इतना महंगा क्यों बेचते हो तो वह बोला– भाई चारा जो महंगा हो गया है।

एक दोस्त दूसरे से– तुम बहुत अच्छी स्विमिंग कर लेते हो कहाँ सीखी?
दूसरा दोस्त – पानी में।

एक प्रोफेसर कुछ सोचते जा रहे थे। तभी एक गूंगा भिखारी पास आ खड़ा हुआ। प्रोफेसर दयालु थे। एक रुपये का नोट उसे पकड़ाते हुए कहा– कब से गूंगे हो भाई?
भिखारी : जन्म से ही हूँ साहब।

दो पागल व्यक्ति बातें कर रहे थे।
पहला : देखो मेरे को आसमान में दो तारे दिख रहे हैं।
दूसरा : बाकी के तारे कहाँ गये?
पहला : अभी रात हो गई है न इसलिए रात को खाना खाने गये हैं।

एक आदमी को रास्ते में एक बच्चा मिला तो उसने अपना समझकर बच्चे के बाल बनवाता है। नये कपड़े दिलवाता है फिर वह उसे अपने घर ले आता है।
आदमी : (पत्नी से) देखो तुम कहती थी कि तुम बच्चों का ध्यान नहीं रखते? मैंने इसके बाल बनवाये और नये कपड़े भी दिलवाये।
पत्नी : अरे! यह तो अपना बच्चा नहीं पड़ोस का पप्पू है।

– सरिता चौधरी (दिल्ली)

– प्रस्तुति : चाँद मोहम्मद घोसी

चित्र पहेलियां

1. अंगूर का उत्पादन विश्व में सबसे अधिक किस देश में होता है?

2. बाल प्वाइंट पेन का आविष्कार किस सन् में हुआ?

3. यह परछाई कौन से प्राणी की है?

4. निम्न में से कौटिल्य द्वारा लिखित पुस्तक कौन-सी है?

क्या तुम्हें पता है?

- महाभारत का पुराना नाम जयसंहिता था।
- मलेशिया में ऐसे पौधे पाये जाते हैं जो आग बरसाते हैं।
- सूर्य की किरणें 8 मिनट 22 सैकंड में धरती पर पहुँचती हैं।
- सन् 1837 में भारत में डाक सेवा शुरू की गई थी।
- सभी प्राणियों में सबसे अधिक आयु कुछए की होती है वह 300 वर्ष तक जीवित रहता है।
- कंगारू का नवजात शिशु जन्मावस्था में एक इंच का होता है।
- जलीय प्राणी ह्वेल संसार का सबसे बड़ा प्राणी है।
- सिनेमा क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए दादा साहेब फालके पुरस्कार सबसे पहले देविका रानी को 1969 में दिया गया था।
- दुबई स्थित 'बुर्ज खलीफा' विश्व की सबसे ऊँची इमारत है। इस इमारत में 163 मंजिलें हैं।
- विश्व पृथ्वी दिवस 22 अप्रैल को मनाया जाता है।
- दरियाई घोड़ा एक ऐसा जानवर है जिसे गुलाबी पसीना निकलता है।
- कंगारू एक ऐसा जानवर है जो तीस फीट तक छलांग लगा सकता है।
- शुतुरमुर्ग एक ऐसा पक्षी है जो कंकड़-पत्थर भी खा लेता है।
- अजगर एक ऐसा साँप है जो एक क्विंटल से भी ज्यादा भारी होता है।
- मछली एक ऐसी जीव है जो पलकें नहीं झपकाती। इसकी पलकें झिल्लीनुमा होती हैं।

– प्रस्तुति : विभा वर्मा (वाराणसी)

चित्र पहेलियों के सही उत्तर

1. इटली में, 2. सन् 1888 में, 3. मेढक की, 4. अर्थशास्त्र।

दो बाल कविताएं : रंजना चौधरी

पत्ता पत्ता

पत्ता पत्ता साथ हवा के
सर सर सर सर गाता,
पास पेड़ से आकर
उसको झोंका एक हिलाता।

हवा साथ में खिल-खिल करती
गाती है मुस्काती,
कहीं दूर से चलती आती
झूला एक बनाती।

तितली आती

तितली आती उड़ती-उड़ती
फूलों में छिप जाती,
फिर उड़ी वह डाली-डाली
तैर हवा में जाती।

धीमें आती कुछ न कहती
लगती कितनी प्यारी,
फूल महकते तितली आती
सजती है फुलवारी।

बाल क्षणिका :
डॉ. दिनेश चमोला 'शैलेश'

तोता

कहता चुप चुप मेरा तोता,
अगर कहीं मैं राजा होता।
सबको पिंजरे में रख देता,
उनको करनी का फल देता।
सुख से सब फिर जीवन सहते,
दुख न किसी से अपना कहते।

गुब्बारे

बाल कविता : गफूर 'स्नेही'

नीले पीले हैं गुब्बारे,
तने फूले हैं गुब्बारे।
फटते ही आवाज करें-
रंग-रंगीले गुब्बारे।

छोटे-बड़े हैं गुब्बारे,
नर्म हैं न कड़े हैं गुब्बारे।
तरह-तरह के आकार में-
तनकर खड़े हैं गुब्बारे।

उड़ने वाले हैं गुब्बारे,
नभ से जुड़ने वाले हैं।
चाँद सितारों में जाते-
फिर न दिखने वाले हैं।

अगस्त अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1 **परी असनानी** 11 वर्ष
चंदूलाल वकीलनी चॉल,
चर्च रोड, गोधरा (गुजरात)

2 **अनीशा रहेजा** 15 वर्ष
रमन मंदिर, फाफाडीह,
रायपुर (छत्तीसगढ़)

3 **समीप कुमार** 12 वर्ष
गाँव : सुरैला, पोस्ट : परसरामपुर,
जिला : बस्ती (उ.प्र.)

4 **धैर्य बब्बर** 12 वर्ष
डब्ल्यू जेड-1664, मुल्तानी मोहल्ला,
रानी बाग (दिल्ली)

5 **आन्या आहलुवालिया** 11 वर्ष
बी डी -38,
पीतमपुरा (दिल्ली)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

सेफाली गौतम (सुरैला, बस्ती), आयान राव (बल्लूवाड़ा, रेवाड़ी), अंशित रतवान (मतवाना, बिलासपुर), सुभाषचंद्र (राजाखेड़ा, धौलपुर), रतनेश (नवागांव, सूरत), नवदिशा त्यागी (लोकनायकपुरम, दिल्ली), गुरुप्रीति (नांगलोई, दिल्ली), अनमोल (मंडी डबवाली, सिरसा), रत्तिका (सेक्टर-13, कुरुक्षेत्र), अविका शर्मा (काजी खेड़ा, कानपुर), साहिल कुमार (चितरंजन रोड, लखीसराय), मानस दुआ (मोती बाजार, देहरादून), नवदीश गुजराल (सेंट्रल टाउन, लुधियाना), संदीप सौरव, संजना, शांति, प्रीति, अनीशा, वंशम, प्रगति, जितेन्द्र, कनिका, वंशिका, सानवी, कृष्णा, यश, पायल, समर्पण, चंचल, कुनाल (रायपुर), ओम, ध्रुव, सलघ, आरती, कृष्णा, आयुषी, कृष्णा, हार्दिक, मोक्ष (गोधरा)।

अक्टूबर अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर 20 अक्टूबर तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) दिसम्बर 2019 अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भरो

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

मैं मॉरीशस से लिख रहा हूँ। मॉरीशस एक लघु भारत भी कहलाता है। मुझे हँसती दुनिया का जून 2019 अंक प्राप्त हुआ। जानकर प्रसन्नता हुई कि आप पिछले 46 वर्षों से इस बाल पत्रिका का प्रकाशन करते आ रहे हैं। वास्तव में बाल पत्रिका का प्रकाशन अत्यन्त साहस का काम है। मॉरीशस में भी हम बाल पत्रिकाओं का प्रकाशन करते हैं। खुद मैं ही 'बाल सखा' पत्रिका का प्रधान सम्पादक हूँ। पर उसके प्रकाशन में काफी कठिनाईयां होती हैं। मॉरीशस में तो पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन की बहुत कम सुविधाएं हैं। ठीक है भारत विशाल देश है। भारत के अनेक प्रान्तों में पत्रिकाएं वितरित होती हैं। पाठक भी अधिक हैं और विविध विधाओं में लिखने वाले भी अनेक हैं। मॉरीशस में यह बात नहीं है।

हँसती दुनिया में कई रोचक, शिक्षाप्रद एवं दिमागी खेल आदि से सम्बन्धित रचनाएं छपी हैं। प्रकाशित चित्र रंगीन हैं और सुन्दर भी।

हँसती दुनिया के प्रकाशन के लिए मैं आपको तथा आपके सहयोगी सम्पादकों को भी धन्यवाद देता हूँ और आशा करता हूँ कि एक शताब्दी से अधिक समय तक पत्रिका प्रकाशित होती रहे और बाल पाठकों में हिन्दी के प्रति अभिरुचि दिन दूनी रात चौगुनी हो।

– डॉ. इन्द्रदेव भोला
(प्रधान, हिन्दी लेखक संघ, मॉरीशस)

मैं हँसती दुनिया की नियमित पाठिका हूँ। मुझे हँसती दुनिया बहुत ही अच्छी लगती है। मैं इसे खुद पढ़कर अपनी सहेलियों को भी पढ़ने को देती हूँ।

अगस्त माह का अंक प्राप्त हुआ जिसमें कहानियों में 'छोटी सी बात', 'इमली का पेड़', 'प्रशंसा के चक्कर में' आदि कहानियां अच्छी लगीं। कविताएं तो सारी ही अच्छी थीं।

– स्वेच्छा सक्सेना (बसरेहर)

साक्षरता के नारे

रहे देश में नहीं अशिक्षा,
नर नारी को मिले सुशिक्षा।

सुदृढ़ राष्ट्र की यही पहचान,
पढ़ा लिखा हो हर इन्सान।

सब शिक्षित हों सभी सुखी हों,
सबके सपने हो साकार।
जगमग शिक्षा दीप जले तो,
हट जायेगा अन्धकार।।

शिक्षा की सब अलख जगाओ,
घर और जग को सुखी बनाओ।

स्वयं पढ़ो और औरों को पढ़ाओ,
यही प्रगति का रूप है।
जीवन में शिक्षा न हो तो,
अन्धकार-मय कूप है।।

बिन शिक्षा है जीवन सूना,
शिक्षा ज्ञान बढ़ाये दूना।

शिक्षा को अब सब अपनाओ,
सबका जीवन सुखी बनाओ।
अन्धकार को दूर भगाओ,
और ज्योति का पथ अपनाओ।।

जो पढ़ते आगे बढ़ते हैं,
अनपढ़ पीछे रह जाते हैं।
शिक्षा जीवन को दिशा बताती,
जीवन जीना यह सिखलाती।।

–रूपनारायण काबरा (जयपुर)

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids

Spiritual Zone for kids

With the blessings of His Holiness
Experience online spiritual learning with exciting and fun features highlights our mission's message. Visit regularly to watch tiny tots excelling in the spiritual journey.

kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share
your talent in form of painting, poetry & story

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/73 : : :
Delhi Postal Regd. No. G-3/DL(N)/136/2018-20
Licence No. U (DN)-23/2018-20
Licenced to post without Pre-payment

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

हँसती दुनिया (चार भाषाओं में) | सन्त निरंकारी (ग्यारह भाषाओं में) | एक नज़र (तीन भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009

Ph. 011–47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan
1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)
e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairtabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029 (TS)
Ph. 040-23317679

GUJRATI
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
1st Floor, 50, Morbag Road,
Naigaon, Dadar (E)
MUMBAI - 400 014 (Mah.)
Ph. 22-24102047

KANNADA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road,
Southend Circle, Basavangudi,
BENGALURU-560 023 (Karnataka)
Ph. 080-26577212

BANGLA
Sant Nirankari Satsang Bhawan,
884,G.T. Road, Laxmipur-2
East Bardhman—713101
Ph. 0342-2657219

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd., Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)